प्रकाशन – 2013

झारखण्ड सरकार द्वारा आयोजित सभी प्रकार के (J.TET) पात्रता परीक्षा का सहायक पुस्तिका

कुड़माली

समटआ :

पतित पावन महतो
बी. एस. सी, एम. ए. कुड़माली, बी.एड

करुणामयी केसरियार
एम. ए. कुड़माली

बड़ाजमुआ, बरवाअड्डा, पो०-कल्याणपुर
धनबाद (झारखण्ड)

एक टुम बिनति

कुड़माली भाषाकर साहित्य संसकिरिति शब्द व्याकरण तथा विशिष्ट कवि का संक्षिप्त जानकारी कुड़माली भाषा आग्रही शिक्षक सामान्य जानकारी समटेक चेष्टा करलाइह ।

एहे पथिटांइ समाजेक भाषा गेआन समाज कर नेग, जग, पुजा पासा, नाच, गान, परब तिहार, विहा सादि, समाज संस्कार कर नियम देल आहेक। ताकरअ भितर जदि कनअ भुल हेलाहि तअ माफ करबे है।

लेखिकाः

करुणामयी केसरियार

विषय सूचि

गनति	पाठ सुचि	पिठ लिखा
1.	बिनन्द सिंह –	5
2.	लोक कबि रामकृष्ण गांगुलि –	7
3.	दीना तांती –	8
4.	सृसटिधर सिंह देव काटिआर –	8
5.	दिजअ टिमा –	10
6.	कुड़माली भाषा में बर्तनी एवं लिपि समत्या –	11
7.	कुड़माली भाषा साहित्य युग से भी पुराना है –	13
8.	कुड़माली भावर –	17
9.	भाषा एवं बोली में अन्तर –	17
10.	नाम पद –	18
11.	नाम पद चिनहे –	18
12.	बदली नाम पद –	19
13.	गुणपद –	20
14.	क्रियाक गुण पद	21
15.	बेरा (Tense) –	22
16.	कारक/पारिक –	23
17.	कारक –	23
18.	लेखा (Number) –	24
19.	कुड़माली काथ में अलंकार –	25
20.	कुड़माली साहित्य में कहावत –	28
21.	कुड़माली मुहावरा/कहावत –	29
22.	विहाक नेवता पत्र –	32
23.	छुटिक खातिर चिठि	33
24.	कुड़मी दहंगीमते दिन –	34

गनति	पाठ सुचि	पिठ लिखा
25.	संस्कृति क्या है -	35
26.	झाड़खण्डी नववर्ष आखाइन जातरा -	35
27.	आदिकाल से ही कुड़मी समाज में धरम पूजा सुर्यापसना का महत्व-	37
28.	कृषि कार्य में रोहनी सांस्कृति	40
29.	करम पर्व भाई बहन का अटुट बंधंन है	41
30.	कुड़मी जाति की सांस्कृतिक पहचान का सुचंक है बादना पर्व -	43
31.	बांदना पर्व का कार्य सुचि -	44
32.	धन लक्ष्मी की प्रकृति पूजा है टुसु -	47
33.	झाड़खण्ड नामकरण -	49
34.	विहाक नेगाचारी -	51
35.	मरण संस्कार -	56
36.	आदिम संस्कृति खदा -	57
37.	कुड़माली चारि जनम संस्कार -	59
38.	कुड़माली (शब्द) साड़ा कुधि -	62
39.	कुड़माली के उल्टा शब्द -	78
40.	कुड़माली वस्तु निष्ट प्रश्न -	82

बिनन्द सिंह

बिनन्द सिंहकर जनम **1770** सालेकर आसपास मने हेइक। एकर जनम स्थान लेइके मतभेद आहेक। केउ केउ कहत बिनन्द सिह सिलिकर राजा घारे जनम हेल रहेक। डा० आशुतोष भट्टाचार्य कहत विनन्द सिंह कर जनम छाटना जेलाकर मेनटुक विश्वार करा हेइक जे बिनन्द सिंह सिलि राज वंश परम्परा क्षेश्रीय रहत। बिनन्द सिंह गैरांगिया समकालीन कवि, गौरांब सिंह आर बिनन्द सिंह कर बड़अ माइकर साड़हु रहें।

गैरांगी बागमुन्डिक सात घड़ाक भितर रहेक। बागमुन्डि काशीपुर राजाक अघीने रहत। अहे समय काशीपुरेकर राजा गड़ुर नारायन सिंह रहत, गौरांग सिंह काशी पुरेक राजा के झुमर सुनाइके मोहित करिके बागमुन्डि राज्य के निलामेक हाथले बाचाउ रहेक। ठिक एहे समय सिली नागवंशी राजाकर अधीने दुइअ लकेक झागड़ा हेलेन। सिली राज परिवार खाजना ना देउएक हँतिर निलम करा हेलेक तखन सिलि राजा आसमान सिंह रहे। राजा आसमान सिंह बिनन्द सिंह के अकर राज्य नीलाम कर हाथले बाँचउएक हँतिर पाठाउलेथिन।

गीतेक माझे राधा कृष्णकर अलौकिक प्रेम वरनना करलाहात बसु विषय दिकले देखा जाइक एखर गीतेक माझे भक्तिकालेक गीत सुरदासकर निआर बिनन्द सिंह कुड़मालि साहित्यकर मध्यकालीन कवि रहत। एकर गीतेक कुड़मालि आर बांगला मिलल आहेक।

एखनअ तक एकखराक गीत लोक मुखे वाँचि रहलाहेक सिलिक राजा स्वर्गीय उपेन्द्र दल गीतेक संकलन प्रचार करलाहत जे आदि झुमर संगीत नामे जाना लाइक। बिनन्द सिंह छोटअनागपुरेकर सबले प्राचीन कविक मइधे एकजन रहत। अकरा आजीवन कुंआर रहत। बिनन्द सिंह एक साधु रकम झुमर गीत गायके भजन करत। बिनन्द सिंह मरल बादे फुलघार बनडि गाव गेलरहत, गाव गेलरहत आर अकर फुलके कहलेथिक मइ विनन्दाबने आहँ। आर एक गीत देवाले लिखि गेलाहात। आगुए कहल रहत हामके आइगे ना पड़ाइहा। हामके एक ताराक सगे माटिक भितर तपि देबेहे। एक ताराक संगे परेक दिन बिनन्द सिंह के खजि नि पाउलेथिक उदिन लेलोकेक

विससास जे काँहा चलि गेलाक आर सेइ जायगाटाँ किया फुलेक बुँदा जनमअ लेइक। एहे रकम लोकेक मुहे आजअ सूना जाइक।

प्रकृति चित्रन- कैसे राखि कुल
पिआ भेलि डुमअरिका फुल
आषाढ़ श्रावन मासे, मनवारि बरसे
नदिंया भरलअ दुइअ कुल

वत्सल्यरूप रूप- यशोदा
दौड़िके यशोदा रानी कहय आव मोर यादुमनी
टाव आव अभागीन वात्या वाछाधन
एतेक तइ करिसना खेलारे बाछाधन

''लोक कवि रामकृष्ण गांगुलि''

पाँच परगनाकर नाम जाइदका कवि रामकृष्णकर जनम सिंभुम जेलाकर भितर इचागड़ थाना पातकुम अनचले विरडि नाम गावे **1867** साले एक कुलिन ब्रामहन परिवारे हेल रहेक। अकर बापेक नाम ब्रजगोपाल गांगुलि। धनवान परिवारे जनम कहिके रामकृष्णकर व्यक्तित्य बहुत आकर्षनीय। देह लम्बा, चउड़ा, गातेक रंग गोरा। कहल जाइक देउघारेक नामि सबले भालअ झुमर सीरअमनि हाजरा अकरा तिन नाचनीके भवपिताक झुमर लकराके लेइके देवघर चलि जातआर हुआ जाइक झुमर गावते रहत। सुमघुर सुर कहिके भवप्रीतानन्द बहुत रिझे हेला आर बाहेर बाहराइकन रामकृष्णकर परिचय सुधिआवलेथिन। रामकृष्ण परिचय देवएक हँतिर पुस्तके ध्यान आर्कषन करला आर सीरमनि हाजराके भालअ गायक कहिके बहुत बड़अ भुल करला। रामकृष्ण चारा (चाइर) बेटा रहथिक। अखराइ कुड़माली अपभ्रंश बाँगालाइ गीत रचना करला। **70** गइएन बछर गंगा लाभ करला।

आँखि आड़े हवअ नाहे
तिलेक बाँचिब ना
श्याम तिलेक बाँचिब ना
दुखिनीर प्रान हे
यातना दिउ ना
यथातथा जेउनाहे
तुमि काँचा सोना
श्याम तुमि काँचा सोना
जे धन पाइबे से आर
फिरे दिबे ना
किछ जानि कि हय बनधु
सतत भावना
तेमारे देखिए छलना
रामकृष्ण हेन ए बिरमबना।

त्रिभुवन छानि छानि
पिरितेक बीज आनि
रोपिते सिचिते हलअ
दिये नयनेक पानि
ताइ झुरे-झुरे करि असंगिनीरे
हइल तरू फुटिलअ फुल
सौरभेते प्रान व्यायाकुल
गाथिया परिलेन माला
हइल भुजंगनीरे
तइ झुरे-झुरे असंगिनीरे
जेबिषे मरिल हृद
नहि माने मन्तोषधि
इथेके बाँचिबे बल रामकृष्ण प्रानी

दीना ताँती

विहारे इचागड़ थाना, बांगला बागमुन्डि थाना 'सीरम' गाँवे दीना ताँती जनम 1840 आसपासे जनम। लोक कवि दीना ताँती सिंहभुम जेलाकर पातकुम गाँवे जनम हेल रहेन। इचागड़ थानाक भितर पातकुम गावें कुड़मालीकर बहुत कवि रहत। भौगलिक दृष्टिकोन यदि पाँचपरगनाले दुर रहले भाषा संस्कृति दृष्टिइ कनअ भेदभाव नाइ। दीना ताँती माइ गरू चराउहेलथिन ताकर संगे संगे कापड़ (लुगा) बुनाकर काम सिखेहेला। आर निजेक जीबन पालन करे हेला। फाँका समये कुड़माली गीत रचना करिके गाउले भुले हेला। गीतेक भितर बेसिक भाग राधाकृष्णक आराधना आर ताकरे लीला वरनना करत। टाँइड टिकड़ेक आवहावआके दुर करेक हँतिर ब्रजुराम, विनन्दिया, गौरांगिया कविराकर गीत गिला गाईके विभोर हेइ रहत। झुमरेक माझे भगवानेक आराधना करेक मुल उद्देश्य रहेक। बादे वैश्नव धरम लेला । एखर जीवन बड़इ दुखी रहेन। मास मद खाइके मुलि रहत।

सृसटिधर सिंहदेव काटिआर

झालदा थाना हेंट जारगो गाँवे 1898 जनम। पिता नन्दलाल माहातअ, माँइ रूपम देवी। इलु गाँवे प्राथमिक विधालये पड़हा सुना सुरू करला (16 बछरे) झेगारअ बछरे बापके हाराइके शिकखाक सुयोग ना पाइके संसारेक भार लेइ हेलेक। छटअ लेइ अन्याय अविचार देखलेइ रागि जाइहेला। इधार उधार घुरि मुलिके लोक संगीतेक उपर वेजांइ झुक रहेक। गरीब दुखी मानुसेक उपर भालअवासाक सहायक रहत । 1925 मानभुम जेला कंग्रेस गठन हेलेक 1926 तुलिन एलाकाइ मानभुम जेला कमिटिकर प्रतिनिधि बनावलेथि । सेइ समइ तुलिने जातीय सप्ताह पालन करे हेला।

इलुक जमिदार शानतिराम माहातअ बहुत आदरेक रहत। शानतिराम माहातअ कर दौलते बहुत जायगा घुरे लाइ सुयोग पाउअल रहत। एहे सुजोगे बहुत गेआनि गुनि मानुषेक सगें मिले मिशे पाउअल रहत। पिलाइ गाँवे 'राधा माधव' आश्रमकर वाउल साधक गोष्ठ विहारी ठाकुरकर संगे वाउल धरमे दिकखा लेला (1336)

1930 साधु सृसटिधर कहिके परिचय हेला।

1339 मयुर भजन जेलाक मकतअकीया गाँवे गुनि मानि समाज संकारक आर लड़ाकु मानुष निरनजन माहातअ एकर सगें आइके जनकल्याण, समाज संकारक लोकचेतना हेनतेन कामे योग देलाथिक। झालदा हाटबागाने एक मेला हेल रहेक अहे मेलाय सृसटिधर एहे गीत गाउअल रहत "ना करिह हेला, भाइ चलो सबाइ हाट बागानेकर मेला" । सृसटिधर कर लेखा अगनतिक झुमेरे मरमानतिक आर आध्यातिक चेतनाक परिचय पाउआक वेसिक माम कुड़मालि भाषाइ लिखल आहेक। झुमरे कृष्णालिला आर जंगल भुमिकर पालागान रचना करत। पालागानगिलाक भितर विख्यात "मान भुमेक घँघौरा"। आर आहेक जेसन 'भात भगवान' वंशोवर्षण पाला, लेठा पाला 'पिरीत पाला' हेनतेन रचना करलाहात। एखर रचना राँचि विश्व विद्यालय जनजातीय क्षेत्रीय भाषा विभागे पड़हाइ हेवए हेइक। राज्य पुनरनगठनेक कमिशन सदस्यरा पुरूलिया आअल रहत झेंग (**6**) फरवरी **1955** ताकर बादेइ **01.11.1956** पुरूलियाइ वंगभुमि घटलेक ताकर बहुत दिन बादे सृसटिधर सिंह अना (**1**) आषाढ़ **1382** (**1975** जुलाई) गंगा पाउला ।

मेजुर देखि कआक बेड़ि खुसि
झड़ल पड़ल पाँखा गिला लेजे लेलाक ठुसि।

मानभूम आहेक बिहारें, आर रहतेक बिहारें हो।
जड़-सड़ (दबकी) रहब किना, आर हामरा डरें हो।
हामरा आइहो एतेक लोक, काकर आहेक एसन हक।

हामरा के लेले जाताक जोरें हो।
जखन रहेक ब्रिटीस राज, सेटा भाबि देखा आज।

दिजअ टिमा

दिजअ टिमाक जनम घँघा गाँवे हेलरहेक (1917) बापेक नाम कैलाश पाठक आर माइ बुधन पाठक। दिजअ पाठक गाँवेक इसकुले दना (2) श्रेणीतक पढ़ल रहत। छटअक समइलेइ गान, बाजना, गीत झुमरेकर उपर बेजाइ झोक रहेक। पड़हा सुना छाड़ि के गीत बनाइके घुरि व मुले हेला। झुमरकर भनिताइ नाम रहेन दिजअ टीमा धीरे धीरे हारमोनिआम, तबलाक वेबहार करे लागला। नाचनीशालाय खेमटा, बाई, राधा कृष्णा विषयक झुमर कर खातिर नामि रहत।

पर पिरिते एमनि लेठा
छाड़िले ना छाड़े सेटा
जेमन संइआ कुलेर कांटा बिधिछे हिआइ
वरंग जाति छाड़ा जाय गो पिरिति छाड़ा दाय ।

पर पिरितेर एमन गुन
जेमन कांचा आमे मिशे नुन
आमे नुने मेशामिशि भालअ लागे बइसाखे
जारा प्रेम करे प्रेम राखिते नारे
तारा जाय गो नरके ।

कुड़माली भाषा में बर्तनी एवं लिपि समस्या

प्रत्येक भाषा में किसी न किसी रूप में लिखने का समस्या देखने को मिलता है। संस्कृत भाषा में वाहिनी व्यवहारिक, कैलाश, उषा, उसा, अन्तराष्ट्रीय भाषा अंग्रेज़ी में जाजमेट (Judgement, Cantre Canter, Banian, Baniyan) विभिन्न शब्द विभिन्न स्थान से भिन्न उच्चारण होता है, जिसके फलस्वरूप शुद्ध शब्द रूप लिखना मुश्किल हो जाता है। बांग्ला भाषा में दो बल है एक 'ब' का उच्चारण नहीं होता है जैसे आश्विन, आह्वान सरस्वती स्वप्न।

हिन्दी भाषा में उच्चारण होने पर भी लिखा नहीं जाता है। जैसे धनबाद, धानबाद, मंडल, मण्डल अंग्रेजी She, See, Shree, Sri एक उच्चारण किन्तु अर्थ मिन्न होता है।

कुड़माली भाषा में भी कोई लिपि नहीं है। देवनागरी एवं बांग्ला लिपि में लिखा जाता है। इसलिए शुध्द शब्द नहीं मिलता है। कुड़माली, कुर्मालि, कुरमाली, माहात, माहातअ, महतो, वैयाकरण, व्याकरण, वेयाकरण, मय, मई, मँई।

भाषा समृध्दि के साथ-साथ शब्द का लेखन धीरे-धीरे सहज, सरल किया जाता है। जैसे कलिकाता, कोलकाता Calcutta, Kolkata संयुक्त अक्षर सरल भावे लिखा जा रहा है। वर्धमान - वर्द्धमान, वरधमान, Burdwan - Bardhman, विद्यालय - विद्‌यालय।

जनजाति क्षेत्रिय भाषा विभाग केवल राँची विश्व विद्यालय में पठन होता है। जहाँ राज्य के विभिन्न प्रान्त का छात्र/छात्री पढ़ने आता है और सबसे पहले लिपि समस्या में पड़ता है। हिन्दी, बंगला, अंग्रेजी केवल अपनी लिपि में पढ़ाई होती है। शेष भाषाओं का देवनागरी लिपि में पठन होता है। फलस्वरूप विभिन्न प्रान्त से आने वाले छात्र/छात्री का लिपि समस्या से सम्मुखी होना पड़ता है। जैसे साँवताली भाषा-बांग्ला लिपि एवं साँवतान परगना के साँवताल हिन्दी लिपि। लिपि भिन्न होने के कारण भाषा का एकरूपता नहीं हो पाता है।

इसी तरह कुड़माली भाषा आज बांग्ला, देवनागरी, उड़िसा लिपि में लिखने के लिए बाध्य होता है। प्रश्न उठता है, प्रत्येक भाषा का अपना लिपि व्यवहार काने पर

भाषा का विकास एवं शताब्दी पीछे चल जाएगा। साथ ही नही लिपि में छापाखाना,पुस्तक समस्या अर्थात् भाषा का विकास की गति रूक जाएगी। विश्व में अनेक भाषा विकसित है। जिसकी अपनी लिपि नहीं है। अर्थात् भाषा विकास के लि लिपि आवश्यक नहीं है।

वर्तमान परिस्थिति में कुरमाली भाषा विकास के लिए देवनागरी लिपि ग्रहण योग्य है। देवनागरी लिपि विज्ञान समस्य लिपि है। भारतीय भाषाओं में समस्त ध्वनि का अंकित करने का क्षमता देवनागरी लिपि में संभव है। विभिन्न भाषा वैज्ञानिकों के मतानुसार सारा भारतवर्ष में एक लिपि का उपयोग आवश्यक है।

रोमन लिपि सर्वाधिक वैज्ञानिक माना जाता है। फिर भी उच्चारण दोष मुक्त नहीं है। But and Put. का एक उच्चारण नहीं होता है। Psychology में P का अवस्थान Hour शब्द का उच्चारण स्पष्ट नहीं है।

इसलिए राष्ट्रीय एकता के लिए जिस प्रकार राष्ट्रभाषा का प्रयोजन है उसी प्रकार लिपि का एकरूपता का प्रयोजन है। भारतवर्ष में **14** (चौदह) भाषा स्वीकृत है, जिसमें **12** (बारह) का लिपि है। आर्य परिवार का भाषा द्रविड़ गोष्ठी का भाषा में अनेक अन्तर है, उसी प्रकार उत्तर भारत की लिपि, दक्षिण भारत की लिपि में विन्नता है।

उपरोक्त आलोचना से दृढ़ भाव से कहा जा सकता है। कुड़माली भाषा में देवनागरी लिपि ग्रहण असंगत नहीं होगा और इसके लिए आपन भाषा आपन लिपि मोह छोड़ना पड़ेगा।

कुड़माली भाषा साहित्य युग से भी पुराना है

कुड़माली भाषा कुड़मी जाति के नामानुसार हुआ है। कुरम शब्द के साथ "आली" प्रत्यय के योग से कुरमाली जैसे बंगाली, नेपाली गढ़वाली।

डॉ० सुनीति कुमार चटर्जी के मतानुसार कुट्मवीत शब्द से कुड़मी शब्द की उत्पति। कुड़मी लेखक एवं इतिहासकार के अनुसार करम शब्द से कुरमी कुड़मी का उत्पति। 'कु' शब्द का अर्थ पृथ्वी और 'रमी' शब्द का अर्थ रमम करना अर्थात् हल चलना या कृपि कार्य करना।

एच. एच. रिजले मानभूम के कुड़मी जाति द्रविड़ जाति के अन्तर्गत एवं कुड़माली भाषा द्रविड़ भाषा के परिवार में है। डॉ० ग्रियसर्न सर्वप्रथम कुड़मी जाति को द्रविड़ जाति के अन्तर्गत माना है, कुड़माली भाषा संबंध, उनका मत विचित्र बुभाग का विभिन्न निवासी का भाषा है। डॉ० सम्प्रति आर्जानी कुड़माली भाषा को द्रविड़ भाषा के परिवार में मानता है। डॉ० नन्दकिशोर कुड़माली को स्वतंत्र भाषा मानते हैं। न की मगही भाषा का अपभ्रंस है।

डॉ० धीरेन साहा झारखण्ड क्षेत्रीय भाषा झारखण्ड के समीमाबद्ध जो साहित्य युग से पुरातन स्वयं सम्पूर्ण भाषा के उत्पति संबंध में तक वितर्क जो जी हो कुड़माली भाषा के निजस्व विशेषता नवीन भारतीय आर्यभाषा तथा स्वीकृति भाषा के पंक्ति में रखा जा सकता है।

1. बंगला, पंजाबी, गुजराती, राजस्थानी भाषा में स्थान वाचक सान्निध्य मिलता है किन्तु कुड़माली भाषा में कुड़मी नाम का कोई स्थान नहीं है अर्थात् कुड़मी जातिवाचक शब्द है।

2. शब्द भंडार का समृद्धि प्रदाय, प्रकृति, ध्वनि वैशिष्ट में भोजपुरी, मगही, मैथिली का समगोत्रिय मालूम पड़ता है। किन्तु कुड़माली भाषा प्रथम सारी सारी भाषा के स्थान पर अधिकार क्षमता है।

3. व्याकरण गत विशेषता

(क) उजाईसाहे अखरा जाहात
तँय जाहास तहरा जाईहा

(ख) अतीतकाल

उगेलाक अखरा गेला

तँयगेले, तहरा गेले हें

(ग) भविष्य काल में 'कुड़माली'

उजाताक अखरा जाता

तँय जाबे, तहरा जावे हें

हामि जाव, हामरा जाब

(घ) निमितार्थ में "कुड़माली" क्रिया के साथ "लाइ" प्रत्यय का योग होता है जैसे करेलाइ, खाइलाइ, देखेलाइ

(ङ) असामाजिका क्रिया में 'के' प्रत्यय का योग होता है जैसे करिक, देखिके, खाइके

(च) संबंध पद में "एक" रामेक श्यामेक

(छ) एबहुवचन में "गिला" प्रत्यय योग कुड़माली में होता है गरूगिला हाँसगिला, घरगिला, गायगिला

(ज) कुड़माली भाषा के एकक क्रिया गुड़का, हुलका, गिरा, विछा, संड़गा

(झ) कुड़माली भाषा के नामधातु बढ़लकराके गँहड़ालसिक गिदरटिके पिधाई देलेक

(ञ) नासिकाय माँय, काँहा, काँच, साँप

(ट) ध्वनि परिवर्तन

कारी-काली, बहु-वउ

गिरहा-ग्रन्थि, लक-लोक

लाच-नृत्य

हिन्दी भाषा का "औ"

कुड़माली में अः उसको-अकर

(ठ) टा, टाई, का योग होता है।

छवाटा गिदरटा, बेटाटा

(ड) कर्त्ता कारक में मगही, भोजपुरी बंगला उड़िया में विभक्ति नहीं होता है,

किन्तु कुड़माली में होता है। जैसे - रामें रावनके मारलेक

(ढ) नकारात्मक में नि-निखाव, निजाव, मँय नि

(ण) सम्मान स्नेह सम्मान के लिए हे, गो, व कि है, किगो, किव

(त) उप्रत्यक्ष - सम्मान में बहुवचन होता है - काकरा हाट जावथुन, बइकारा घारे नाईखअ

(थ) कुड़माली साहित्य को गम्भीरता से देखने पर समृद्ध साहित्य भंडार है लोकगीत, लोककथा, मुहावश, पहेलियाँ, कहानी, नाटक जिसमें आदिवासी का जीवन पद्धति, प्रकृति प्रेम संस्कार का अमूल्य खजाना मिलता है और कुड़माली भाषा संपूर्ण प्रथम सारी भाषा में रहने का क्षमता है।

(द) कुड़माली भाषा का अपना संगीत धारा है, जैसे- धउआ, ढप, जावा, करम, संहराइ, झुपाउ, बिहा, नटुआ, झुमर, टुसु, अन्य भाषा में नहीं है।

(ध) विलक्ष्णात्म दृष्टि से देखने पर प्रवाद, वाक्य, पहेलिया, मुहावरा में कुड़मी जाति का जीविका भितिक, सामाजिक, धार्मिक रीति व्यवहार का सम्पूर्ण चित्त मिलता है।

1. धर्म- कल कुड़मी कड़ा वेद शास्त्र छाड़ा। जागतिक सत्य एक पुतं न चुलहाई मुत।
2. ढंग न चलन चंदर गतर।
3. आईग कांहु अदा, राजा काहु दादा।
4. सामाजिक रीति- हाड़ि किनयिन ठंकिके केनियाई करथिन देखिके।
5. पहिल कड़ि अकर वादे छकड़ि।
6. वृतिगत- चासा चिन्हाई आइड़े, ताँती चिन्हाई पाइड़े।
   दामड़ा गरूकहार, डँगुआ जेनिक घार।
   जहत नेही त महत नेही।
7. शिक्षागत- छटअ देखि आड़ाई,
   बड़ देखि डाड़ाई।
   मकरे पानी टिकरे धान।

अकालेकबर चाँड़े बेटी बिहाकर

8. गुढ़ार्थ- कड़ही सुतय अड़ही पड़ही।
सियान सुतय भरसी भरी।।
जाँचले जामाइ पिठा नीहि खाय।
भिनसरिया ढेकी चाटे जाय ।।

9. जातिगत- कुड़मिक पेछुवाटे बुईध, ढेरकांठे महुआ सिंझे ढेइर बातें कुड़मी बूझे।

उपरोक्त आलोचना से ज्ञात होता है कि कुड़माली भाषा एक स्वतंत्र भाषा साहित्य युग से पुरातन एवं भारतीय भाषा वर्ग में रखा जा सकता है।

समय सापेक्ष किन्तु शताधिक लेखक कवियों के साधना द्वारा भारतीय भाषा दरबार में आसन लाभ करेगी। राँची विश्वविद्यालय में इस भाषा की पठन-पाठन एम.ए.में होती है।

कुड़माली भाँवर

भाषा - जन साधने हामरा कहिके सुनिके, लिखिके आपन विचार के बुझा-बुझि, जाना-जानी करिअ अके भाषा कहथिक।

भाषा - भाष् धातु से बनवाहेक-जाकर अर्थ बोलना।

1) जन भाषा पहिल सिखिअ, मायेक भाषा

2) कहेक आर सुनेक भाषा के मौखिक भाषा

3) लिखेक आर पढ़ेक भाषा टा लिखित भाषा

"भाषाक मूल रूप टा मौखिक भाषा"

व्याकरण- जन शास्त्रे पथिई भाषाक लिखित तथा मौखिक रूपेक शुद्ध गिलान पावे अके भाँवर वा व्याकरण कहथिक।

भाँवरेक- भिनु-भिनु विचार आहेक जेसन-

1) वर्णेक विचार

2) शब्देक विचार

3) पदेक विचार

4) वाक्येक विचार

भाषा एवं बोली में अन्तर

1) To the linguist there is no red difference between Dialect 7 language. (So Ppier)

2) There is no instrinstic difference between language & dialect. (Poei)

3) Saying that, say Everest is mountain hotborn hill, a hill but between these two the dividing line cannot be drawn. (Greenson)

4) It is impossible to draw exact line of demarcation between either dialect & languages though at their frontier they merge inperceptibly are into another. (L.H.Gray)

1) भाषा का क्षेत्र बोली के क्षेत्र से बड़ा होता है अर्थात् एक भाषा के अन्तर्गत अनेक बोली रहती है।

2) भाषा के अन्तर्गत बोली है, बोली के अन्तर्गत भाषा नहीं ।

3) बोली भाषा से सृष्टि होती है अर्थात् माँ-बेटी का सम्पर्क।

4) भाषा साहित्य, शिक्षा, शासन कार्य परिचालना किन्तु बोली लोक साहित्य एवं बोल चाल में।

5) भाषा बोली का लिखित रूप या सामाजिक रूप

6) अन्य भाषा समझने में असमर्थ किन्तु बोली समझने में समर्थ।

7) साहित्य रचना श्रेष्ठ होने पर बोली भाषा में स्वीकृत प्रायः जैसा ब्रजबोली-अर्थात् ब्रजभाषा।

8) राजनैतिक दबाव एवं प्रभाव में बोली भाषा बनता है। जैसे - हिन्दी का खड़ी बोली - 'आज राष्ट्रभाषा"

नाम पद (Noun)

जन शब्दअ लकेक गाँवेक खायेक पीयेक आयूत नाम बुझाईक अके नामपद कहथिक।

संज्ञाक भेद :

1) व्यक्तिवाचक संज्ञा - हावु, भुख, नंदा, कुदरा, लेदिया, नुनिया।

2) जातिवाचक संज्ञा - हाँस, खुखड़ी, सियार, गुरू, महिस।

3) समूह वाचक संज्ञा - कुधि, डिंग

4) द्रव्यवाचक संज्ञा - जन्हाईर, महुआ, गुंदली, कदअ, धान।

5) भाववाचक - दलिदर, काडराहा, गिजड़, कढ़ि, सुख-दुख।

नाम पद चिन्हे

(क) आमटाँडे छाता मेला लागई

(ख) एकादशी तिथिई करम डाली गाड़ेक

(ग) भादर मासे जनाई लेट गद-गद

(घ) भुखेक दिने गुँदली/मडुआ घाटा भात

(ङ) डेम, बाँधे टुसु मेला लागई।

(च) "राँगाहाड़ी" कुदरा देवता हेकेंई।

(छ) सभे गाँवे गेराम पूजा हेवईक।

क) हाबु आइड़ कदराइसाहे

ख) भखु गडअला है।

ग) नंदा घार गेलाक

घ) आइज कुदराथाने पूजा हेतेक

ड़) नुनिआ महुआ बिछे गेलाही

च) घारे हाँस मासेक बेसाती

छ) खुखड़ीटिई डिम देहेक

ज) एक खाला माछ धरलेक

झ) छितराइल महुआ गिला कुधि करे।

ञ) खेरिआने धान डिगाँई दिहिन

ट) इबछर महुआ जन्हाईर निहि हेलेक

ठ) धरने धान मारे गेलेक।

ड) ऐई बेड़ी दलिदरा हेकेंई

ढ) गरूटा कढ़ि हेकेंई।

बदली नाम पद (pronoun)

नाम पदेक बदले जेई पद गिलाके कहथिक कुड़मालि भाँवरे अहे शब्दअ गिलिके बदली नाम पद कहथिक।

(1) सभे, सभ

(2) जेइ, जाखरा, जेगिला

(3) एँइ, एखरा, इ गिला

(4) अंइ, अखरा, ऊ, उगिला

(5) कअन, किनाआ, कोखरा काँहा, कनठिन

(6) केऊ, कनह, कोइअ

(7) कनठिने, एहेठिने

(8) कखन, जखन, काँहा

(9) कतेक, जतेक, रिचेक, टुएक, एतेक

(10) एथि, अथि – तथि

(11) एहेबाटे – अहेबाटे – हावबाटे

(12) अमुक – फानला।

(क) सभे गेले भालअ हेतेक।

(ख) अखरा सँपड़लाहात ।

(ग) कने कहलाक इकथाटा मिछा हेकेइ।

(घ) कनठिने सूरजाही लागाइ ।

(ङ) फानला ससुर घार गेलेअ।

(च) अमुके तहराके खजेहेलेक ।

(छ) रिचिक झअर आनि ।

(ज) काँहा गेरहस कखन आवबे।

गुणपद (Adjective)

जन शब्दे नामपद, क्रियापद आर गुणपदेक गुण बुझाइक कुड़मालि भाँवरे उहे शब्द गिलिके गुणपद कहथिक।

जन शब्दे नामपद, क्रियापद आर गुणपदेक गुण बुझाइक कुड़मालि भाँवरे उहे शब्द गिलिके गणपद कहथिक।

(1) तँदड़ ज़ेनी, डिगर गिदर, कड़िया मुनिस

(2) पेंका बुढ़ा, लेदागाछ, झाँक झाँपड़ा।

(3) एक कुँचड़िधान, दु डुभा लेटअ, तिनसलि।

(4) तिन गिदरेक माई, पहिल बेटा, सँझली जेठी ।

(5) ताँतेक ठेठि, माटिक ठिलिया, सन सुतरी पुआल दड़ी।

(6) एहेठिन हाव छुँदे, अकर पेछुइ

(7) हुबेक दिन, आफर उभा बाहांग, गोबर कुढ़ा कुढ़ी

(8) महुआ गुँड़िक लेटअ, बिरिह बड़ी

(9) डेडि, दबड़, आढ़हाइया

(10) गुज गुजा आँधार, फिंगफूटा इजतिया राइत थुलुर थुपा बुढ़ा।

(11) चाँडे-चाँडे डेग दिहि, मित्रा ठुनकले गेलि

(12) सिझल, राँघल, सड़गल

(क) पेंका बुढ़ा दुपहरा खाइसा है।

(ख) कढ़िआ मुनिस पाइलह कामटा पूरबेक न निहि

(ग) लेदाबड़ गाछेक तरे बेटी छोवआ गिला गाल मारहत।

(घ) बाँउड़ी दिने दुकुंचड़ी धान बाँधलिअ।

(ङ) रोहिन दिने तिनसली धानेक आफर गड़ि देलिहा।

(च) सैंझली जेठी ताँतेक ठेटि पिंघलाही।

(छ) पुँआल दड़िक झड़ि बुनइसाहे।

(ज) फिंगफुटा इंजतिआ राते गरामथाने विचारेक जुड़अही।

क्रियाक गुणपद (Adverb)

(1) कतिखुन, रतिखुन, एवेतरी, हाववेरी

(2) इठिन, उठिन, एहेठिन

(3) हिंदगे, हुँदगे, कँदे, जँदे, तँदे

(4) एसन, जेसन, तेसन, इलेखे

(5) एतेक, अतेक, एतना, अतना, दमें

(6) आर मेनेक, मेनतुक, फेइर

(7) नेंही - ठेपअ धकड़, चाँदि

(8) माताली, घाघाली, मकमकानी, माइगअ, बापगोअ, दूरमाइरि, बाह-बाह, झर-झर।

वेरा (Tense)

कुड़माली भाषाय क्रिया जन पहरे खेपइक अहे पहर के बेरा कहथिक। वेरा के साधारणतः तिन बाखरा हेवेक :-

(1) चलती वेरा : (Present Tense)

(क) उ जाइसाहे	अखरा जाहात
(ख) तञ जाहास	तहरा जाइदा
(ग) हामि जाइ हे	हामरा जाइहे

(2) बितिवेरा (Past Tense)

क्रियाक दसा विति पहर बुझाइक अहे पहर के बिति बेरा कहथिक।

(क) उ गेलाक	अखरा गेला
(ख) तञ गेले	तहरा गेलेहे
(ग) हामि गेलिअ	हाम रा गेलिअ

(3) आउति वेरा (Future Tense)

क्रियाक दसा आउति पहर बुझाइक अहे पहर के आउति बेरा कहथिक।

(क) उ जाताक	अखरा जाता
(ख) तञ जाबे	तहरा जाबे हैं
(ग) हामि जाब	हामरा जाब

कारक/पारिक

कर्त्ता	ने, ०	ऐ, ई	०	०	०	०
कर्म	को, ०	के, ०	के०	के	के, को	के, कै, को
करण	से द्वारा	ले द्वारा	से सइ	सो से सन्ति	से	से से ३
सम्प्रदान	को के लिए	ला हे लाही	के लागिन लाइले	ले खातिर लागि	ले खातिर	लागि लेहे लो
सम्बन्ध	का, के	एक क कर	कर केर	केरे कर करा	केर कोई	कर के
सम्बोधन	हे हो अवे	ए ऐगो एहे एहो	ए हो	हे रे	हे ही हो	हे ही

कारक

कर्त्ता कारक : प्रथम 1 ऐ (विभक्ति)

क) मदने दहिदे, ख) नागरे बाजाय बाँसी हामे नाही

कर्म कारक : द्वितीय विभक्ति

क) हेरी परीन पयोधरे, विपदे राखे मोरे

कारण कारक : तृतीया विभक्ति

क) लाज की छुले जाइ जले

ख) कि बाँधने बाँधि हिया

ग) वाणे मारे देली

सम्प्रदान : चतुर्थ विभक्ति

क) ढाकाइते, आनिते कि गुण सुनाते

पंचमी विभक्ति :

क) गगने जल बअरिसे

कुड़माली ष्ठी विभक्ति में 'एर' 'क' होता है।

क) सावनेर पवनेर सने

ख) कोकिलेर स्वरे

ग) जलदेर डाके

अधिकरण : सप्तमी विभक्ति

सने-संग में, समाजे समाज में,

लेखा (Number)

कुड़माली भाखिई लेखा बुझाइक टुल भिनु-भिनु आहेक।

1) एक लेखा : मञ, तञ, अञ

2) साँगि लेखा : हामरा तहरा, अखरा ऐखरा एकले खाले साँगि लेखा बनावेक धरन

क) निखा शब्दअ जुड़िके- काँटना निखा बहाल खेते जाबड़ देथिक।

ख) नि साड़ा जुड़िके : हामे- हामनी

1) हामनी हीड़ खेत धान काटे जाहें

2) तहरानि नाइ गेले हैं कामें

ग) रा शब्दअ जोड़िके :

1) तरा सेदिन किना कहलिओ

2) गिदर गिला खेलहत।

घ) गिला साड़ा जोड़िके :

1) बाछुर गिला पिदकहत्।

2) गिदर गिला खेलहत।

ड़) गिलान साड़ा जोड़िके : पाँठा, भेड़ा, बरद, साँड़ खाँखड़ा गिलान धरला अथिक।

च) मेढी शब्देक : गिलि साड़ा जोड़िके

क) फानलाक बेटीगिलि - रही गेली।

ख) गायगिलि खोलिहीन

छ) गाय महिष गिलिन अनुकरिले छागेर गिलिन ठऊका बेचला।

कुड़माली काव्य में अलंकार

अलंकार कथाटिक साधारण माने हेलेक भूषण, कुड़मालिई गहना कहत। जेसन नागरीक गाते कहना साजेइक तैसन साहित्येक लिखेक शब्दअ गिलाके साजाअल जाइक, कांहु-कांहु शब्दअ गुछाक माने भावे बुझाउले, पड़हइते सुनते बेस लागेहक।

साहित्येक गइद - पइद् केहनि लिखेक साजाअल दंगेक अलंकार कहेलाइ पारा जाइक। कुड़माली साहित्ये बिरवित्थान लेखन पुंथि खंजि देखले बेजांइ गहना आहेक। जे कनह भाषाक अलंकार बखरा दुई भागे बांटा करल आहेक। शब्दालंकार आर अरथालंकार।

हामरा देशेक विकासशील भाषाक लेखा-जोखा खदि नदि करलें देखा जाक भिनु-भिनु भाषाविदगन अलंकार बारेक मत जेसन करलाहात । केउ-केउ कहत अलंकार निहिहेले काइबअ रचना निहितेक। पुरना जुगेक पुराण सभे निखईतारा निअलंकारे काइबअके राँढ़ी कहलायिक, भामह, दंडि, उद्भट, रदरट, मानगार पंडित निखाक मते हामरा जेसन परधन परसाधन करिके साजि-गुजि करिअ असने काव्येके शब्देक मालाक गुछअल करिके गाँयले काव्य लागेइक । बांगलाक कवि जयदेव बिना तापेक आइग कहलाहे।

कवि भामट कवि निखाक मत बिना आलंकारेअ काव्य लिखा जाइक। काहे न काव्य कविक मनेक उद्वेग ले बाहराइक । मनेक भाव प्रकाश करेलाइ जदि शब्दअ नागड़ाअल हेउइक तअ भाव परवाहेक ताल सुड़र सधर काहातेइक आर एक बार तार काँटतो चाँडे जेशन जड़इक निहि तेसन काव्य लेखेक गति यामि जाइक। एहे अब सयाइ अलंकार साहित्येक केबल मान धरि राखइक।

सुनल कथा वेद व्यास जखन महाभारत लिखल रहइ लखन श्रीगणेश देवताक टुएक मने अहंकार हेरहइ तेई शरतअ राखल रहे जे हामर कलम बनदअ निहितेक। गे आनि वेदव्यास कहलेंइक तँइ कनह शब्द ना बुझिके लिखे नि पारबेहे। आर जखन व्यास देबेक कनह काम पड़ तेइक तखन एसन शब्दअ लिखेलाइ कहेतेलिस जेंटा गणेशेक मगजे निबुझ। पुरन जुगले आधुनिक युगेक काव्य धाराक भिनु-भिनु खेजाक जेशन, छायाबाद, परगतिवाद, प्रयोग आदि कबिक संगे एकमत हेइके कहेलाइ पाराक

अलंकार काव्य रचनाँइ सहायक कबीर, तुलसी, धरमवीर प्रसाद आदि कविक रचनाइ सावलीन भाव, बेनजनाँइ अलंकारिक बिर - विथान देखल जाइक।

उपरेक आलोचनाइ एहे सिद्धान तअ आवबे परिए अलंकार काबबेक सुनदरअता बढ़ाउएक। शब्दअ सुनेक छन्देक, भावेक आधारे भाग करेलाई पारा जाइक। कुड़माली साहित्येक भांडारे अलंकारेक खाजाना आहेइक। इबार अलंकारे टु एकटि सब्दअ देखल जाइक-

उपरेक आलोचनाइ एहे सिद्धान तअ आवबे परिए अलंकार काबवेक सुनदरअता बढ़ाउएक । शब्दअ सुनेक छनदेक, भावेक आधारे भाग करेलाई पारा जाइक । कुड़माली साहित्येक भांडारे अलंकारेक खाजाना आहेइक । इबार अलंकारे दु एकटि शब्दअ देखल जाइक-

1. छेकानुप्रास

(क) करिल बाँसेकेरि डालिया
डालिया नये-नये जायरे

(ख) जाकर चुन, ताकर पुन

(ग) गुरू-गुरू रहि गेल, चेला चिनि बनि गेल

(घ) खेतिहर गेइल धार, धाँए-बाँए हार

2. वृत्तानुप्रास

(क) तोरे आंगेनाय हामे नाचब मलहरिया।
तोर आँगेनाय हामे नाचब मलहरिया।

(ख) टुसु-टुसु करि हामरा, टुसु नाइख घारे गो
कने टुसुके लेइ गेलेक, फूलेक माला देइ गो।

3. बीपसा

(क) हिदा-दिहा करम राजा दिहा आशीष गो
मोर भइया बाड़होतोउ लाखअ बरिष गो।

(ख) भिजाई देवो भिजाई देवो साड़िया संदेशा
सुखाइ लेबे उजे पवने बासाते सुखाइ लेबो।

4. जमक

धन गजरतृ धन सन-सन पवन
घने-घने बिजुरी ए खेला।

5. रूपक

रामचंद पुत्र लागि तितीया परब उपमा-

क) आईज हामके बेची देले भाई
धरि जेसन दहेक मछलि गो

ख) अधरे दुकुल जेसन बाँधली फुल

भ्रांतिमान

क) कन धनी गौर बरनी भानुसुता जाइछे रे
हेरो से सुबल मुखअ कमल मधु लोगी ओली धाय रे।

ख) काकर धनी पानी आने जाय
पुर्णिमाक चांद जेइसन बद्रन देखाय।

व्यतिरेक

किना देवेक उपमा, रम्भा, तिलकतमा, रति नहेक तुलना

व्यजस्तुति

ओ विधि बलि की गुणे
ताँञ विधि कहलि
करअ अविधि सकली

कुड़माली साहित्य में कहावत

आदिम समाज का परम्परा की कानून व्यवस्था समाज व्यवस्था, राजनीतिक के जानने के लिए कहावते या लोकोक्ति पथ-प्रदर्शक है। साम्राज्य नष्ट होता है। किन्तु प्रवाद नष्ट नहीं होता है। दीर्घकाल तक अभिज्ञता, सार्विक सभ्यता प्रवाद वाक्य में प्रस्फटित होता है। 'रामराज्य' बोलने से लोग एक वाक्य में समग्र व्यवस्था में आँच आता है।

प्राचीन भारतीय साहित्य जातक कथा, वैदिक साहित्य में कहावत का उल्लेख मिलता है। प्रवाद वाक्य का उत्पत्ति बीच प्रवाद वाक्यों का अपना वैशिष्ट है तो मनुष्य के मन को आकृष्ट करते हैं। प्रवाद लोक सम्पत्ति है जिसमें सहज सरल बोधगम्य होता है।

कृषि वृत्ति (1) जखने 'रस', तखने चस।
(2) चासा चिन्हाई पाइड़े – ताँती चिन्हाइ
(3) चासाक दिने सात ताल बहई

नीति ज्ञान शिक्षा – (1) उलिक संगे धूलि जाय भूला भूली।

गूढ अर्थ – (1) हाथिक सेछु कुक्कुर भूँके।
(2) सनला गाछे टांगाई मर।
(3) लियाई निहि पावई धोधी लेइकै दौड़य।

जातिय सरित्र – (1) ढेर काठे महुल सिझे बहुत कथाई कुड़मी बुझे
(2) सुड़ी, तेली, पोद्दार, कलिते उद्धार।

धर्म संस्कार – (1) मायेक करम मायेक धरम।
(2) नाढ़ाई खोजई इंद परब।

चिरअ सत्य – (1) खूँटाक बले कड़रू नाचे।

समाज रीति – (1) खापड़ा धारेक चाली, ससुर धारेक साली
(2) बिहानेक कुटुम आइल गैल,
साँझेक कुटुम रहि गैल
(3) तअरेक माटी ऊपर कर, उमी देखी भातर कर।

कुड़माली मुहावरा/कहावत

1. काना खड़हा एक मुड़ा जियाढा
2. मुचिक घारे फुचिक झारे
3. ढंग न चलन चन्दर गतर
4. कन कथा न कोकाँल बेथा
5. बापेक काले चास नाई पोंगा झुड़ेवास
6. सनला गाछे टांगाय मर
7. परेक भरसाय दुर्गा पूजा
8. चार आनाक खुखड़ी छोह आनाक छुयानी
9. पोरेक रागे भुएं भात
10. गाछे इंदंर नेजे चिन्हाय
11. माँ रहले मोसीक खातिर काँदे
12. रहिस विटि संहे सभेजात वँहे
13. कपाले नाई घी ठक ठकाले हतेअ की
14. चेकाक डरे पाराई तेतँर तरे वासा
15. गाँव बड़अ तकर ऊपर कुल्ही
16. गाँवेक केनिया निघँन नाखी
17. रसाय भेड़ि पकाय भरे
18. टिरालकेक गाँठे गाँठे पाप
19. चाल न चुल्हा माया न छोआ
20. भात देवेक भातार निहि किल मरेक गुसाई
21. नाम गहगहि पेंचा राजा
22. खापड़ा घारेक चालि ससुर घारेक सालि
23. आय गेलेक बाँदना बेटि छोवाक काँदना
24. केकलासेक दौड़ बादाड़ गड़ा
25. उलिक संगे धुलि जाय भुला भुलि
26. मरदेक मरदानि मायाक कहुहानि
27. बड़ देखि आड़ाये छट देखि ढ़ाड़ाय
28. खुँटाक बोले कड़रू नाचे
29. नाढ़ा नाचे खोचार भरो
30. रांड़िक बेटा गोबंदा
31. आँधारेक कुकुर बासाते भुके
32. लिलज नाचे भेठर गाय लाज कुल शील खाऐ देखे जाए
33. एका पुता आगुन मुता
34. जाकर शील ताकर लड़हा अकरे भाँगर्ह दाँतेक गोड़ा
35. बसे देले सुते खोजई
36. ढ़ेर खाठे महुल सीझे बहुत कथाय कुड़मी बुझे
37. बापेक थोड़ा थोड़ी बेटाक चाप दाढ़ी
38. माया मरद राजि किना करतई गाँवेक काजि

39. खन्जना का चाल शिखले चाटिक चाल हाराई
40. ढेंकि कुटा मरद घानि घुरा बरद
41. लारि न पारि मुँहे काहे हारि
42. आपन सिमाय कुकुर राजा
43. निर्धानाक धन हेले दिने देखई तारा
44. भेड़रा गाजाड़े
45. गरिबेक राग पेटें पचे
46. नाड़ाई खजई इंदु परब
47. दिते नतुथे केवल तथि कुटते
48. परेक शिरे खाइ आइड़े चडे हागे
49. पर खाउका नढाक बाप
50. जाड़ेक कानि बरसाक छानि
51. अलहकंक भकभंड
52. निजेक खाईके कतेक शिखाउभ
53. शिखले कांहा न ठकले जांहो
54. खाब निहित हेटि देबअ
55. उइरा धुइरा मधुपुरा
56. छँड़ा छिटकावास ऐड़िआ गरूक चास
57. हाथिक पेछुई कुकुर भुका
58. सुखे विराल गाछे चापे
59. विहानेक कुटुम आईल गले साँझेक कुटुम रहि गेइल
60. गुँदुर गुस मुनसा – रिमिझिमि बरसा
61. आधाल बंखि पांठि तीता
62. छुटुमुटु लेक डागर चौंना
63. जनजामाई भागना तिननाई आपना
64. चाकरीक भात खपरीई
65. पूरना चारेक भात बाइढे
66. वतर पावले चुटिआई ढोलकाटे
67. लियाई निहि पावई तघंधि लेईके दोड़ई
68. उपरे धोधी पेछुई सियाड़ा
69. जाब – जावगड़ेक धुरा लेई जाब
70. हुचकाई के पूचकि देवा
71. साउढ़ा उजु पासे पासे गाठ
72. हुचुके बाहर भेल
73. अनाड़िक धान भाना
74. निभातारी भातार पावले बासे वापेस पारा
75. ना पारकेक नाती भातार
76. गाँववेक मोधा पर गाँवेक मधु
77. मड़ाक ऊपर कद हड़रा
78. हाथेक आलसे मोंच बाँका
79. विहा पार हेइके छामड़ाई नाच
80. विहा धारे माया राजा
81. विहाक दिनेक कोहड़ा रोपा
82. पाग बाँधते परव फुराई
83. पिरीते मजिलेमन किवाहाड़ि किवाड़म

84. गंठे न भुनाई पाधाय न बाँधाई
85. चाषा चिन्हाई आड़े जालहा चिन्हाई पाड़े
86. बरेक भाई लरार्गुजा
87. कन विहाके दुर आलता दभड़
88. राँधल भाते आँधार काहे
89. दुधाल गायेक लाथ मिठा
90. संगा भेड़ि पकाय मरय
91. पाप काकरो बाप नाय
92. दादा ऐसन कि दियो पाउबे
93. हुचकाइ के देले सांघा दादाक ले भोजि ढांगा
94. टिटोए काँहु सरग टेकाय
95. बाँस बने डम काना
96. घारेक खाइके बनेक महिस रगदा
97. गाँव जावा आर गाछ चापा समान
98. चालाकेक गु तिन ठिन
99. जाइत कुड़मि अरजे चिनि खाय पानि
100. गिदर खेलाई दिन गेलि आज कहय डायन
101. सात कोसे बानि चोदहो कोसे पानि
102. सुमेक धन शैताने खाय बाचे से आदालते जाय
103. नदि धारिक चास मिछाई करा आस
104. माछिञ खोजय घाव आर मानुसे खाजय दाव
105. सरावने गाछि आर मांगेघ बाछि

बिहाक नेउता पत्र

मानगर/मानगरी

मञ हिञा खालास नेहरे नेओतअहन चारा आषाढ़ **1412** ताः **19.06.05** (बेराबार) रविवार, गाँव-माडु, डाक-तुलि, थाना-झालदा, जिला-पुरूलिया बसगतिया श्रीकान्त डुमरियार (माहतअ) छुटु बेटा दुलाराय भुवनेश्वर माहातअ कर, संग गाँव+डाक-तुलिन, थाना-झालदा, जिला-पुरूलिया बसकतिया कार्तिक माहातअ बड़अ बेटी दुलारी कुँवारी रीना माहातअक, सर सगुने बिहा हेतेक तुलिने।

माडुले तुलिने बिहाक छामड़ाय नेग-योग सबाई हामर घार ड़िड़ाय आअबे करिहा तहर सुमअ आसिरबादे बर कनियाय चिरअ सुखी हेवत।

आरा करो।

नेहअरे नेवतेंआ	आगबढ़आ
श्रीकान्त माहातअ डुमरियार	दीनबन्धु, विवेक
गाँव-माडु	समस्त माहातअ गुस्टी
थाना-झालदा	
जिला-पुरूलिया	

जहार बुढ़ा बाबा बुढ़ी माय

वरः	कनियाईः
भुवनेश्वर डुमरियार (माहातअ)	कुँवारी रीना माहातअ
पिता-श्रीकान्त डुमरियार	पिता-कार्तिक माहातअ
(छोटअ बेटा)	(बड़अ बेटी)
गाँव-माडु, डाक-तुलिन	गाँव+डाक- तुलिन, थाना-झालदा
थाना-झालदा, जिला-पुरूलिया	जिला-पुरूलिया

बिहाक बेअरा

दना (**2**) आषाढ़ **1412** (ताः **17.06.06**) सुकुरबार

गाते हरेद (लगन)

चारा (**4**) आषाढ़ **1412** (ताः **10.06.06**) बेराबार (रविवार)

सर सगुने बिहा

इसकुल फिस माफ करेक खातिर हेडमासटर के चिठि ।

मानगर हेडमासटर साहेब
मन्दाकिनी हाइ इसकुल बड़ाजमुआ
बरवाअड्डा, 22.04.2001

हुजुर,

मंञ अनिता माहातअ तहर इसकुले गइ (7) केलासे पड़हँ। हामर बाप अना गरीब चासा लागे आर हमर आरअ चारा भाइ बहिन पड़हत। जाकर हँतिर सब खरच खरचा हामर बापके उठाउए हेइक।

अहे खातिर विनति कहँह जे हामरा जेसे पड़हा लिखा करे पारिअ, ताकर हँतिर फिस माफ करेलाइ नेहर करहँ।

अनिता माहातअ
रोल नं० 45

हेडमासटरके छुटिक खातिर चिठि

मानगर हेडमासटर साहेब
गोविनदपुर हाइइसकुल
गोविनदपुर, 8.12.2008

हुजुर,

मंञ नमिता माहातअ तहर इसकुले सिहम केलासे पड़हँ, हामर बडअ मामाक बेटाक बिहा टेना दिन नादे 14.03.2008 हेकेइक। हामके हुँआ जाइए हेति।

अहे खातिर नेहर करहन जे 14.03.2008 ले 17.03.2008 तक छुटि देवेक खातिर नेहर करहँन।

नमिता माहातअ
केलास- सिहम
रोल नं० 45

कुड़मी दैंहगीमते

1. अना मास (पहिल) मधुमास	Spring	बसन्तकाल
2. दना मास (दूसरा) निरन मास	Summer	ग्रीष्मकाल
3. टेना मास (तिसरा) रपा मास	Rainy Season	वर्षाकाल
4. चारा मास (चौथा) भादर मास	Autumn	शरतकाल
5. माचा मास (पाँचवा) काटनिमास	Harvest	हेमन्त
6. झेईक मास (छठा) जाडमास	Winter	शीतकाल

दिन (Day)

1. चाँदबार	Monday	सोमवार
2. खरनबार	Tuesday	मंगलवार
3. ह–अबार	Wednesday	बुधवार
4. डिनिवार	Thursday	बृहस्पतिवार
5. सुकुरबार	Friday	शक्रवार
6. बेराबार	Saturday	शनिवार
7. बेराबार	Sunday	रविवार

संस्कृति क्या है ?

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी, समाज में जन्म लेते है एवं मनुष्य जीवन का सारी आवश्यकता आदान-प्रदान से पूर्ण होता है। समाज एक व्यवस्था जिसका कुछ नियम एवं सिद्धांत है। जो सबको मानना पड़ता है। यह नियम प्रति मान समाज में जन्मांतर हस्थांतरित होता है। एक व्यक्ति ऊपर व्यक्ति से शिक्षा लाभ करें-इसनियम प्रणाली ज्ञान प्रतिमान प्रकार मुख्य प्रथा समाज का आभैतिक संस्कृति का गठन करता है।

मनुष्य अपना आवश्यकता को पूरा करेन के लिए नाना प्रकार के उपकरण यन्त्र, भवन, मिथेन तौर करते है। जो समाज का भौतिक संस्कृति बनाते है। इस प्रकार सांस्कृति भौतिक एवं अभौतिक वस्तु का समन्वय अपना निर्वाचन करते है।

(i) Haeble : Culture is the sum total of learned behaviors patterns

"संस्कृति सिखे हुए व्यवहार प्रतिमानो का कुल योग"

(ii) E. B. Tylor :- Culture is that complex whole which includes knowledge belief, art, moral, lave and custom and any other capabilities a equived by man as a member of society.

"संस्कृति एक जटिल इकाई है जिसके अन्तर्गत ज्ञा, विश्वास, कला, नैतिकता, कानुन प्रथा तथा सभी प्रकार के क्षमता, आदत आती है। जो मनुष्य समाज में एक सदस्य के रूप में प्राप्त करते है।

कुड़माली चारी को दो भागों मे बाँटा जाता है - (क) सामाजिक (ख) परिवारिक जिसका प्रत्येक भाग का आलोचना यहाँ किया गया।

झारखण्डी नववर्ष - आखान जातरा

सांस्कृति वैचित्यपूर्ण विभिन्नताओं में एकता हमारे देश भारत का अनमोल प्रतीक हैं। कृषि निर्भरशील इस देश का प्रत्येक त्योहार-मेला कृषि सम्बन्धित होता है। आज का दिन देश के विभिन्न प्रान्त में, विभिन्न रूप में मनाया जाता है। किन्तु झारखण्ड मुल्क में इसका खास आदिम विशेषता परिलक्षित होता है। आज से

झारखण्डी जनता कृषि के रूप में मनाने का परंपरा है।

उत्तरायण :- आखान जातरा, खेलाई चंडी रूप में मनाने का परंपरा है। आखान यात्रा का शब्दिक अर्थ है- आच्छा यात्रा या शुभ यात्रा इसे झारखण्डी भाषा में सगुण कहते है।

आखान यात्रा का विशेषता इस प्रकार है-

(1) आज से कृषि वर्ष का शुरूआत हल पुण्यहा से होता है। इसका विशेषता यह है कि परिवार के प्रधान नया वस्त्र पहन कर पूर्व - दिशा में अढ़ाई चक्कर हल जोतना है। हलवाहा बैल को पैरों को पानी से धोता है। सिर-सींग में तेल सिंदूर देकर प्रणाम करता है। कृषि कार्य एवं सांसारिक कार्य में सहायक - लोहार, नापित, कुम्हार, भातुआ बारमासिया आदि कर्म संप्रदाय के लोग कथा-वार्त्ता करके युक्रि कार्य सीखते हैं।

(2) गृह निर्माण कार्य में आज के दिन ही बुनियाद दिया जाता है।

(3) लड़का-लड़की का प्राथमिक शिक्षा हाथ में पेंसिल देकर शुरू कराया जाता है।

(4) आज का दिन सगुण मानकर लड़का - लड़की का वैवाहिक संबंध तय की जाती है। आखान जातरा - खेलाई चण्डी मेला के रूप में मनाया जाता है। इनके अलग-अलग मनाने के आदिम विशेषता एवं परंपरा है। खेलाई चण्डी मेला एक विशेष स्थान पर लगता है एवं इनका एक अलग पहचान हैं।

(क) भव परव - इस पर्व की विशेषता है कि पुजारी नया वस्त्र पहन कर भाव-विह्वल होकर झूमते-झूमते गरम कड़ाही से हाथ द्वारा पिठा निकालता हैं। बाजे-गाजे के साथ लोग इसे देखने के लिए पहुँचते हैं।

(ख) मुर्गा लड़ाई - खेलाई चण्डी मेला का मुर्गा लड़ाई अपना अलग पहचान रखता है। इतिहास में वर्णित है कि रोम में साँड़ का लड़ाई होता हैं। मुर्गा लड़ाई एक निर्दिष्ट स्थान पर उभय पक्ष के मुर्गा को धारंदार अस्त्र पैरों में बाँधकर लड़ने के लिए छोड़ दिया जाता है। जिसका मुर्गा मर जाता है या भाग जाता है, उस मुर्गा का मालिक जीते हुए मुर्गा के मालिक को अपना मुर्गा दे देता है।

(ग) तीर प्रतियोगिता - इस मेला का भी एक अलग पहचान हैं। जंगल में

रहने वाले जनजाति को जंगली पशु से अपने को रक्षा करने के लिए तीर चलाने का अभ्यास करना अति आवश्यक है। किसी निर्दिष्ट स्थान पर निशाना लगाना पड़ता है। दस प्रतियोगिता से लोगों को अच्छा-खासा मनोरंजन भी होता है।

(घ) कोई - कोई मेला में जिन्दा मुरगा या भेड़ा को दर्शकों के बीच फेंका जाता है। लोगो में इसे पकड़ने के लिए लड़ाई शुरू हो जाती है। इस प्रकार मुरगा या भेड़ा का कोई भी अंग जिसे प्राप्त होता है वह अपने आप को भाग्यवान समझता है।

(ड़) कभी - कभी कोई मेला को लोग देवी की अभिलेख के रूप में मनाया जाता हैं। पुत्र-कन्या या रोग मुक्ति के लिए भी लोग इसे मनाते है।

(च) साधारण - यह मेला पहाड़ी या नदी के तट पर लगता है, जैसे-शीलवती मेला, महुलबनी स्वर्णरेखा मेला एवं हरिहर मेला इत्यादि।

उपरोक्त विश्लेषण से हय निश्कर्ष निकलता है कि आखान जातरा कुड़माली दिन पंजी का नयावर्ष का नया दिन हैं। वर्त्तमान में सामाजिक आर्थिक प्राकृतिक एवं औद्योगिक परिवर्त्तन होने पर भी आदिम संस्कृति का प्रभाव आज भी देखने को मिलता है, इसका विलुप्त होना असंभव सा लगाता हैं।

आदिकाल से ही कुड़मी समाज में बतौर धर्मपूजा सूर्योपासना का महत्व

झारखण्ड के समाज में धर्म पूजा एक महत्वपूर्ण उनुष्ठान है। यह पूजा आखड़ा पूजा, पाँता पूजा, उपर पूजा, बड़ पूजा, आदि नामों से प्रचलित है। संथाल, मुण्डा, उराँव, आदि समाज में राह पूजा का प्रचलन हैं। किन्तु कुड़मी समाज में इस पुजा का विशेष महत्व है। गराम, जाहीरा, कूदरा, बाधुत आदि देवतापओं में से धर्म ठाकुर का स्थान शीर्ष पर है। ग्राम देवता की पूजा में सभी ग्रामवासी सम्मिलित होते हैं किन्तु धरम पूजा केवल परिवार युक्त गोष्ठि अर्थात् टबम बाद सम्पर्क एक गोत्र युक्त लोक सम्मिलित होते है। एक प्रवाद प्रचलित है कि बापेक धरम मायेक करम अर्थात्पितृवंश का देवता धरम एवं मातृवंश का करम। धरम का अर्थ है सूर्य एवं करम का अर्थ है कुर्म (पृथ्वी)। सन्तान सृष्टि के लिए माता-पिता का मिलन अनिवार्य हैं। उसी प्रकार जगत सृष्टि के आदि पिता "धरम या सूर्य" एवं आदि माता कुर्म या "बसन्त माई" का मिलन पारम्परिक हैं।

इसी उक्ति से सहज रूप से अन्दाज लगाया जा सकता है कि आदि सृष्टि या जगत की उत्पति का रहस्य इस जाति को मालूम था। इसी कारण धरमपूजा या सूरज की आराधना जीवन में अहम भूमिका रखती हैं। ऋतु परिवर्तन में सूरज की उत्तरायन यात्रा के साथ कृषिकार्य का सूचना (हलपूण्य) आखाइन यात्रा के दिन 'अढ़ाई पाक' हल चलाकर उत्तर दिक् में सूर्य देव को प्रणाम किया जाता है।

नृतात्विक विद्वानों के अनुसार कुड़मी जाति द्राविड़ गुष्ठी की हैं। भाषान्तिक दृष्टिकोण से इस जाति की भाषा कुड़माली भी इसी को अनुरूप है इस लिए कुड़मी जाति आदिम हैं। आदि काल से ही धर्म देवता की आराधना यह जाति करती आ रही हैं। जिसका परम्परागत संस्कार हर कुड़मी परिवार में हैं। सूरज उगने का समय हर घर सम्मुख एवं गृह देवता (तुलसी मंच) के पास "मोड़ली" सूर्य देवता का प्रतीक आँकना एवं हाथ में जल लेकर प्रणम करना इसका उदाहरण है सूरज डुबेक समय प्रदीप प्रज्वल्लित करके विदाई नमस्कार किया जाता है, झारखण्ड क्षेत्र का हर आदमी सुबह मुख घोते समय या नहाने के समय सूर्य देव को प्रणम करता है।

अरण्य दिंश में आदिवासी की जीवन यात्रा सहज नहीं थी। जंगली वन्य जन्तु - जानवर का उपद्रव लगा रहता था। इससे रक्षा कर पाना मुश्किल था। इसलिए सृष्टि के आदि पिता-माता के पास शरण लेकिन आश्रय तथा सुरक्षा की प्रार्थना करते थे। यह आदिम संस्कार झारखण्ड समाज में आज भी रह गया हैं। संतान जनम के साथ-साथ या नाता के समय माता, दुधुमाई (दादी माँ) यज्ञ परिवार का कोई भी संतान की मंगल कामना करके धरम ठाकुर का मानत करता है। उसी समय से ही बायाँ पैर लोहा का बेड़ी एवं सिर का बाल छोड़ दिया जाता हैं। सामर्थ के अनुसार आधमुड़, एकमुड़, अथवा दाँयें-बाँयें पाँठा बलि देने का नियम हैं। धर्म का मानता विवाह के पूर्व तक परिशोध करना अनिवार्य है। मानता रहने पर संतान मर जाने से जलाया नहीं जाता है, बल्कि मिट्टी दे दिया जाता है। धरम का उत्सर्गीय पाँठा का किसी कारणबश रक्तपात या अंगहानी होने पर पूजा में नहीं लगता है इसलिए उसपर अधिक ध्यान दिया जाता है। यदि पाँठा खो जाता है तो दूसरा व्यवस्था करना पड़ता है। किन्तु लोक विश्वास है धरम पूजा के संजोज के रात यें खोया हुआ पाँठा लौटा आता है । पहली संतान के उपरान्त किसी संतान दुःख या रोग ग्रस्त होने पर

धरम की मानता करते है। जिसे सुरजाही करते है।

पूरे टोटम या गुष्टी की मंगल कामना में पूजा–अनुष्ठान को आखाड़ा या पाँता पूजा कहते है, इसकी विशेषता यह है कि आखड़ा पूजा के समय साधासण कार्तिक का चाँद अगहन, माघ, फागुन, वैशाख महीना के शुक्ल पक्ष शनिवार या रविवार के दिन अनुष्ठित होता है। हल्दी मखाया हुआ चावल देकर गुष्ठी भयाद एवं कुटुम्बों को न्योता दिया जाता हैं। आत्मीय व्यक्ति पूजा के दिन चावल ? तरकारी, पाँठा लेकर उपस्थित होते हैं। नकद देने की कोई परंपरा नहीं हैं। पूजा के पहले दिन गुष्टी केसनी सदम्य नापित से नाखून, केश बनवाकर संजोत एवं उपवास कहते है। पूजा सूरज उगते होनी चाहिए। पूजा स्थल आम–जाम का डाली देकर छामड़ा या मंचन किया जाता है। कुल्ही में बनमाला टंगाया जाता है। पूजा के समय मंच के सामने चार कांड़ गाड़ दिया जाता है तथा सफेद सूता से घेरा जाता है। धान का घट बनाया जाता है। कहीं–कहीं पुरोहित रहने के बावजूद अधिकांश क्षेत्र में गुष्टी का बड़ा व्यक्ति पूजा करता है।

पूजा का मंत्र नहीं हैं। देवता का उद्देश्य प्रसाद निवेदक द्वारा कम से कम एक पाँठा एक पाँठी (अक्षतजनी) की बलि से होता हैं। इसके बाद बड़ पत्ता का दूध ढार दिया जाता हैं। दूध देने के समय सभी व्यक्ति उपवास करके रहते है। यह लक्षणीय है कि दूध ढार सूर्य का प्रतीक है झारखण्ड के सामाज में अन्यान्य पूजा में कांठाल, सारई पर्त्ता का व्यवहार होता हैं। किन्तु धरम पूजा में केवल बड़ पत्ता काही उपयोग होता है। झारखण्ड प्रदेश मे बड़ पेड़ की विशेषता आज भी हैं। समाज के विशेष व्यक्ति का तुलना पड़ पेड़ से करते है। भोजन शुरू होने के पहले पुरंतर हल्दी मखाया आतव चावल का बना भात प्रत्येक पना प्रसाद के रूप में दिया जाता हैं। आखड़ा पूजा गुष्टी की समुहिक मंगल कामना से होता हैं। इसलिए बहार से टोटेमिक कुटुम्ब इस पूजा में भाग लेते हैं। पूजा गाँव के बाहार तलाब के सामने निदिंष्ट स्थान पर होती हैं। जिसे धरमधुटु का आखाड़ा कहते हैं। गुष्टी के सभी आदमी नया कपड़ा पहनते हैं। भोजन के समय वृत्ताकार अर्थात् सूर्य की प्रतिकृति बनाकर बैठते हैं। आखड़ा पूजा में खाना, तरकारी या कोई भी वस्तु अधिक हो जाने पर घर लाने का नियम नहीं हैं। वही इसे गड्ढा खोद कर गाड़ दिया जाता है। भोजन के अन्त में पत्ता

उठाने की भी विशेषता हैं। प्रत्येक अपना-अपना पत्ता मिट्टी से घिसत का निर्दिष्ट स्थान पर इकट्ठा करते हैं। आखड़ा पूला की और एक विशेषता है कि वहाँ स्त्रियाँ नही जाती है। वे घर में ही अपना खाना बनाती है। सूरजाह्नी अथवा धरम पूजा में ऐसा कोई नियम नहीं है क्योंकि यह पूजा घर में होती हैं।

झारखण्ड के प्रत्येक पर्व-त्योहार व सामाजिक कार्य में नृत्य गीत होता है। किन्तु धरम पूजा के अवसर पर नृत्य नहीं हैं। केवल संजोत के रात सोहराई गीत गाया जाता है। ये गीत कुड़माली गीतों के आख्यान हैं। गीतों में काव्य समृध्दि नहीं है किन्तु अपने समाज के लोकजीवन की कहानी सरल भाषा में व्यक्त की जाती हैं। कुड़मी समाज के धार्मिक जीवन में धरम ठाकुर को ही प्रधान देवता मानते है।

कृषि कार्य में रोहनी संस्कृति

कुड़मी जाति के जीवन प्रणाली कृषि पर निर्भर है। इसलिए कुड़माली संस्कृति प्रत्येक अनुष्ठान में कृषि का रूप प्रतिफलित होता है।

पौथी पांजी सृष्टि के पहले से कृषि संस्कार के रूप में पुरे वर्ष का परिचय मिलता है। कृषि वर्ष का नव वर्ष आखान यात्रा माघ महीना का पहला दिन से हल पुन्यहा के साथ शुरू हो जाता है। किसान के रिति-रिवाज में जाड़ा, महुआ, निटन, रोपनी, बाँदना, काली कर्म के आधार पर बँटवारा किया गया है। निरन महीना (जैठ) का रोहनी नक्षत्र से बीज-बिहिन का पुन्याह लगाना आरम्भ होता है। झारखण्डी खेती का अनाज का भी कवशेषता देखने को मिलता हैं। धान, मडुवा, गुँदली, ज्वार, बाजरा, उड़द, अरहर, कद्दु, कोंहड़ा, झींगा आदि सभी प्रकार के बीज-बिहिन यह राकहिनी नक्षत्र सात दिन के अन्दर किया जाता हैं। यानि बोया जाता है क्योंकि किसान यह मानता है कि रोहिन का विहिन नष्ट नहीं होता है। रोहिन दिन क्या हाता है? कुड़माली समाज व्यवस्था में लक्षणीय । घर आँगन को लिप-पोत कर तुलसी पिंडा के सामने चौक पुर कर शुभ प्रतीक बनाता तथा कुषि देवी का कल्पनीक पैर का निशान दरवाजा से घर तक बनाया जाता है। विहिन वपन करने वाले घर के मुखिया तुलसी पिंडा से विहिन को माथे में उठाकर खेत ले जाते है और खेत में बुनता है।

घर के बाहरी दिवार में गोबर का प्रलेप साँप के भय से रक्षा के लिए दिया जाता है।

रोहिन दिन एक विशेष प्रकार फल खाने का रिवाज है। आज कल इस चारी (रीति) को अन्धविश्वास मानता है। किन्तु इसको विज्ञान सम्मत विचार करने से वास्तविकता सामने आता है। प्रकृति पुजारी, प्रकुति से प्रेमी झारखण्डी जाति का अपनी समस्या-चिकित्सा पद्धति प्रकृति से ढुँढने का कोशिश करता हैं। आज का दिन प्रति झारखण्डी परिवार में एक विशेष प्रकार पिंड़ा बनाया जाता है। जिसमें बनाने का विशेष कला का जरूरत नहीं है किन्तु स्वास्थ्य के लिए उपकारी कोई "खापर पीठा" में दूध दिया जाता हैं, और उस दूध मिला हुआ पुआ को सारा परिवार पेटभर के खाता है। इसमें भी आदिम संस्कार जुड़ा हुआ है।

करम पर्व भाई बहन का अटुट बंधन हैं।

दिया दिहा करम राजा दिया आशिष गो ।
हामर भैया वाँचतउ लाखअ बरस गो ।।

इस लोक गीत के साथ पूरें झारखण्ड क्षेत्र में करम उत्सव का शुरूआत हो जाता हैं। झारखण्ड संस्कृति का यंह एक महत्वपूर्ण पर्व हैं। यह भादों एकादशी के दिन मनाया जाता है। करम शब्द का कुड़माली भाषा में करम पेड़ को कृषि देवता के रूप में डाली गाड़कर पूजा किया जाता है। करम परब किसान लोगों के कृषि का कर्म करने का या चास कार्य समझा जाता है। भादो एकादशी के नौ दिन या पाँच दिन पहले गाँव की अविवाहित लड़की करमा की डाली गाँव के समीप तालाब, झरना, या नदि के पास नहा कर डाली या टुपा में बालू देकर कुरथी, घाँघरा, मूँग, मकई, आदि अनाजों के साथ हल्दी मिलाकर अपना-अपना डाली में रखती है। जिसे 'जावा' कहा जाता है। उसी दिन से करम परब का शुरूआत हो जाता है, जिसमें कुछ नियम पालन करना पड़ता है। जैसे-बासी जला हुआ खाना नहीं खाती है। इन लोगोंइ में विश्वास है, कि बासी खाने में जावा गल जाती हैं। गरम चीज खाने से झुलस जाती है। करमा परब किसी पर्व के साथ-साथ इस क्षेत्र में अधिक महत्व इसलिए है। इस पर्व में प्रत्येक बहन अपने भाई की दीर्घायु शुरू-स्मद्धि के लिए करम राजा से

प्रार्थना करती है। जावा बोना हो जाने के बाद मूल जावा को माची पर रखा जाता है। और उसके चारो ओर दुसरे जावा डाली रखी जाती है। इसके बाद सब संजोति एक दुसरे के हाथ पकड़ के शुरू करती है अपनी लय या ताल के साथ "करमा - गीत"। झारखण्ड प्रदेश में बहुत प्रकार की भाषाएँ है, संथाली, मुड़ारी, कुड़माली, कुडुक, पाँच परगनिया आदि ।

भारतीय स्वतंत्रता के बाद से सब भाषाओं का साहित्य का भी विकास होने लगा है। संस्कृति का कोई भी ऐसा पहलू नहीं है जहाँ लोक गीत, नृत्य नहीं है। लोगो के जीवन में सुख-दुख आशा निराशा, हर्ष विशाद, घात-प्रतिघात, हास परिहस इस लोकगीत के माध्यम में मिलता है। करन परब भाई - बहन के प्रेम का प्रतीक है।

कनअ परबे भाई रे आनबे - लेगबे
कनअ परबे करले विदाय ।
करम परबे भाई रे आनवे लेगबे ।
जीतीया परबे, करबे विदाय ।।

इस तरह प्रतिदिन सुबह शाम करम आखड़ा में जावा को रखकर गाना गायी जाती है। इस क्षेत्र के लड़कियाँ जनम से ही धैर्य साहसी, बुद्धिमति, और पति, सास, ससुर का लछना - गंजना से विचलित न होकर अपना कर्त्तव्य कर जाती हैं। मैके जाने के लिए सास-ससुर का अनुमति देना पढ़ता है तब पति पत्नी को कहता है :-

तोहीं जे जाबे धनी आपन नैइहर,
कोने तोर सोंची देतोअन धन ।

प्रकृति बैचित्रमय इस क्षेत्र में काशी फूल जाने से लड़कियों में आशा की किरण जगती है कि करमा परब आ गया है मेरे भैंया मुझे लेने आयेगे।

काशी फूल फूटी गेल, आशा मोर लागी गले
कोहु गो ससुर हम्मरे विदाय
भैया मोर आवतो लेगे लाय
काश फूल झड़ीगेल नेहिअरेक आश टुटी गेल
नाहीं आवओतो भैया लेगे लाय।

बापके मोर कहि दिया लेगोतो दिन चारी

परब तिहार - परब तिहार सासेके अधिन
सभे परबे प्रभु घुराई फिराई दिहा
करम परबे ना घुराय दिहा ।।

करम एकादशी के दिन सभी पर्वतिया दिन भर गाँव के सभी करम आखड़ाओ में बारी-बारी से अदल-बदल कर नाचती गाती रहती है। सूर्य डुबने के समय तालाब से नहा कर अपना-अपना आखड़ा में करम डाल गाड़ती है।

जखन तोहे करम गुसायँ अरून बने
तखन हामें करम गुसार्य ससुर घारे ।

जखन तोहे करम गुसायँ आखड़ा भितरे
तखन हामे करम गुसायँ नेहिअर घारे ।

गाँव के महतो करम राजा का पूजा आराधना करते हैं। सभी पर्वतियाँ घी की दीया जलाकर करम राजा से अपना गाई की दीर्घायु की कामना करती हैं। पूजा के बाद हल्दी में लगा हुआ कपड़ा या सूता अपना भाई को हाथ में बाँध देती है। जो कि उच्च वर्णार्ग व्यवस्था में रक्षा बंधन के रूप में मनाया जाता है। पूजा के समय पूछा जाता है। काकर करम ? तो उत्तर मिलता है। 'मायेक करम, बापेकधरम' अर्थात् मातृकूल का करमा एवं पितृकूल का धरम पूजा श्रेष्ठ माना जाता है।

इसके दूसरे दिन करम डाली के विसर्जन के साथ करमा समाप्त होती है।।

कुड़मी जाति की सांस्कृतिक पहचान का सूचक है बांदना पर्व

दक्षिण बिहार के सदान व आदिवासी दीपावली का त्योहार कई नामों से, कई रूपों में और कई तरीके से मनाते है। कहीं सोहराय कहीं बदई तो कहीं बदना के नाम से । कहीं तीन दिन तो कहीं पाँच दिन तक त्योहार मनायर जाता हैं। कुड़मी जाति का एक महत्वपूर्ण त्योहार है बंदना। इस संबंध में एक लोकगीत प्रचलित है- 'आई गेलेक बांदना, बेटी छोवाक कांदना'।

बांदना त्योहार के बाद छोआनागपुर क्षेत्र के मेल निवासियों की नवोदित ब्याही

बेटियां ससुराल जाती है। मैके का आनंद, उत्याह, सहेलियां, बंधु-बांधवों को त्यागकर पराधीन जीवन-यात्रा का मार्मिक मनोभाव ऊपरी उक्ति से झलकता है। भारत वर्ष के त्योहारों का संबंध किसी न किसी का कार्य के साथ रहा है। इसी तरह बांदना का संबंध कृषि कार्य के एक भाग हल चलाने का कार्य समाप्त होकर नयी फसल घर में आने की शुरूआत होने से है। बांदना के अवसर पर कृषि कार्य में प्रमुख कारक 'गो' आदि गृहपालित मवेशियों की जननी 'कपिला' माता की संतान की सुरक्षा के लिए उनके स्वस्थ एवं सबल रहने की मंगलकामना कर बांदना की जाती है।

इस अवसर पर यहां की संस्कृति रही है कि जामाय (दामाद) को भी 'बादा' जाता है। अर्थात् नवदम्पति को लड़की के मायके में सास-ससुर तथा गुरूजनों द्वारा उज्जवल भविष्य एवं सुखमय गृहस्थ जीवन व्यतीत करने की 'बंदना' कर आशीर्वाद देकर विदा किया जाता है। युग परिवर्तन के साथ-साथ बदलाव आया है। फिर भी छोटानागपुर में कड़मी जाती के इस त्योहार के अस्त्वि को बचाए रखा है।

बांदना का कार्य सूची

बांदना के अवसर पर महिलाएं सभी घर-आंगन को मिट्टी-गोबर से पोतकर, साफ-सुथरा करती है। अमावस्या की शाम घर के दरवाजों पर एक जोड़ी खेड़ घास की मुट्ठी दी जाती है। दूध और गुड़ी का पिट्ठा सालपत्ता पर रखकर रूई जलायी जाती है। इसको 'जागर' कहते है। खेती करने के सारे उपकरणें - हल, कुदाल, गैंता, राक्सा, मय आदि को चाल की गुड़ी का छींटा दिया जाता है। छींटा देना उन्हें जागृत करने का धोतक है। ऐसा कर उनकी बंदना की जाती है। गोहाल घर में रात भर सरसों तेल की बत्ती जलायी जाती हैं। इसके बाद इखबाड़ी, बैंगन बाड़ी, बिलाती बाड़ी, धान के खेतो को भी जागृत किया जाता है। राम में ग्रामीण युवक ढोल-मांदर लेकर घर-घर जाकर 'गो' बांदना का गीत गाते हैं। इसे धांगड़-झागड़ कहते है। ग्रामीण मुखिया (महतो) के घर से धांगड़ का गीत उसने आदेश लेकर शुरू करते हैं।

गो बांदना के गीत

अहिरे- चांद डूबल भुड़का उठल रे बाबू हो,
सिर सहिषी ठुके से काठाड़ ।
उठो पुता खुलो रे मेलान ।।
अहिरे- नेहि हामे उठब नेहि हामे जागब रे बाबू हो,
नेहि हामे खुलब मेलान ।
शीत सिसिरे हामर आठ अंग भिजी जाये,
नेहि हामें खुलब मेलान।
अरिहे- पाये जे दिब पुता रेशमी खड़म रे बाबू हो,
गाये दिब दहरि चादर ।
माथाय जे दिब पुता सारि सुगार पागड़ी,
तबु पुता खुल रे मेलान ।।
अहिरे- काहां पावें रेशमी खड़म रे बाबू हों,
काहां पावें दहरि चादर ।
काहां पावें सारि मुगा पागही,
नेहि हामे खुलब मेलान ।।
अहिरे- छुथार घरे पाअब रेशमी खुड़म रे बाबू हो,
तांती घरे पाअब चादर ।
आर राजा घरे पाअब सारी संगा के पागड़ी,
तबु पुता खुल रे मेलान ।

इस गीतों में गोमाता बागालों से विनती करती है कि भिनसार (सबेरा) हो गया है। गोहाल खोलो और उन्हें मैदान ले चलो। तब गो रक्षक गोमाता से प्रार्थना करते हैं कि ठंड है शीत से सहेत खराब हो जाएगी मवेशियों को मैदान नहीं ले जायेंगे। तब गोमाता बागालों को पैरों पर खड़म, माथे पर पगड़ी और बदन पर चादर ओढ़कर गो सेवा के लिए प्रेरित करती हैं।

दूसरे दिन भी पहले ही दिन जैसा- लरालिपा (गोबर से साफ करना) कर घर के तुलसी मंच के समक्ष कृषि के उपकरणें को एकत्रित कर रखा जाता है। गृहकर्त्ता एवं गृहिणी उपवास में रहकर सालूक फूल गोहालों की संख्या के अनुसार लाते हैं।

बिना पानी दिए गुड़ी से सूप पर अर्चना की जाती है। गृहदेवता से संतानों एवं गोमाता की मंगलकामना की जाती हैं। इस अवसर पर सभी मवेशियों की सिंगों पर तेल और सिन्दूर का लेप लगाया जाता हैं। शाम के समय पुशुओं की संख्या के अनुसार धान के सीस (बाइद) से माला तैयार की जाती, और पहनायी जाती है। इसी समय फेटाइन बाछुर (मादा) और एड़ा बाछुर (नर) की गोमाता और गोपिता समक्ष बंदना की जाती है। केवल मवेशियों को ही नहीं, नया जाताय् (दामाद) और बेटी के लिए भी वैवाहिक कार्यक्रमों को पुनरावृत्ति कर बंदना की जाती हैं ताकि उनका भविष्य तथा सांस्कृतिक जीवन सुखमय हो । गुड़ी के घोल से कुल्ही से आंगन तक सुन्दर ढंग से सजाया जाता है।

तीसरे दिन बांदना त्योहार की समाप्ति का दिन होता है। इसदिन सभी अपने-अपने कुल्ही के द्वारा में खुटा गाड़कर उस पर एड़ा बाछुर (नर) को बांध सुप या चमड़ा से डराकर खेल प्रदर्शन कर किया जाता है। प्राचीन रो सभ्यता के इतिहास में (Bull-bight) सांढ़ो की लढ़ाई का उल्लेख मिलता है। संभवतः उसी का अनुकरण भी यह हो सकता है। किन्तु उसके कार्यक्रम और इस कार्यक्रम में मेल नहीं खाता है। इस आकर्षक बाज-बाजना से दर्शक आकर्षित होते है। इस कार्यक्रम को छोटानागपुर में 'बरद - खुंटा' के नाम से भी जाना है। बरद खुंटा का

गीत- अहिरे- एते दिन चरालि बाछा-काचय खुपड़े रे बाबू हो,
आज तुंय एते अपमान ।
किना दोश करलि बाछा लिलि गलाय दौड़ि रे,
मरा चामे दिलि रे बजड़।

आधुनिकता की दौड़ मे समाज जितना भी वकृत क्यों न हो पर बांदना, कुड़मी जाती की जातिय संस्कृति का एक मुख्य अंग रहा है। कुड़मी जाति आदि काल से ही गौ को मातृस्वरूपा समझकर पूजा अर्चना करती है।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। मानव को सामाजिक जीवन इसलिए कहा जाता है कि ये अपनी संस्कृति का निर्माण कर सकते है। समाज में कुछ नियम एवं सिद्धांत है। प्रत्येक जाति की अपनी-अपनी संस्कृति है। इस तरह छोटानागपुर में कुड़मी जाति का सांस्कृतिक परिचय बांदना है। करमा के बाद बांदना गीत गाँव-गाँव

में मांदर के ताल से झूमर और आहिर गीत के माध्यम से प्रस्तुत होते है।

धनलक्ष्मी की प्रकृति पूजा है टुसु

टुसु पर्व मानभूम, सिंहभूम, हजारीबाग, राँची, मयुरभंज, मिदनापुर और बांकुड़ा अंचल का एक लोक महत्व है। मकर वाहिनी अर्थात् गंगा पूजा उनके नामा अनुसार मकर पर्व भी कहा जाता है। तुसला पर्व अर्थात टुसु पूजा अपभ्रंस में टुसु पर्व हुआ। तुसला लक्ष्मी देवी का प्रतिक है।

टुसु पूजा कृषक सांप्रदाय के बीच लक्ष्मी रूप में देखा जाता है। इसे अगहन संक्रांती के दिन ठकुराईन डेनी भीतरान, अनुष्ठान करके टुसु मणी को साथना किया जाता है। धान कटनी खत्म होने के बाद अंतिम समय में कुछ परिपुष्ट धान का गुच्छ छोड़ देने के बाद मिट्टी में छिपकर रखा जाता है। उसके बाद वृहस्पति, शुक्र या सोमवार को धान गुच्छ को जड़ समेत अनुष्ठानिक सुर्यास्त के बाद माथा पर वहन करके घर में लाते है। यही है ठकुराईन या डेनी अनुष्ठान।

ठकुराईन लक्ष्मी देवी को समक्षा जाता है एवं धान गुच्छ को लक्ष्मी का प्रतीक माना जाता है। टुसु पूजा के प्रथम दिन शाम के समय पवित्र होकर नया माटी का सौरा अथवा नया बाँस का डाला में उपकारणदि (आट व चावल, गेंदा फूल) लेकर निराला घर का दीयरखा (कलोंगा) चावल चूर्ण द्वारा कल्पना करके टुसु मणी की स्थापना की जाती है। शाम के समय एक-एक ताजा फल अर्पित किया जाता है।

पुष्पांजलि के बाद गीतांजलि का पर्व शुरू होता है। टुसु गीत को पाँच भाग में बाँटा सकता है। साधारण, रंगीन, लहर, जागरण तथा भंसान।

सधारण गीत में कहा जाता है टुसु रात को मातृगृह आयी है, रात को कहीं नहीं निकला दुसरे दिन सुबह जब खेलने निकली तब बहुत सी जोड़ी पारी साथी मिली, किन्तु टुसु का मन रो रहा है। टुसु अपने साथी से बोलती है।

'खेला भाँगली' संगतया माय हामर डाकोहो खेलाक गुटी घुराई देलो, माय हामर कांदो हो।

लेकिन हार मानने के लिए राजी नहीं है। इसलिए कड़ी भाषा में निंदा करके

बोलती है।

हामर टुसु मुढ़ी भाजे, दलान कठाक भीतरे,
उआर टुसु छेछरी मागी, आँचल पोती ले भाइंगे।

कुड़माली संस्कृति में टुसु को लक्ष्मी का स्वरूप बेटी के रूप में मानते सांसरिक परम्परा के अनुसार लाड़-प्यार, आदर-दुलार आदि दिया जाता है। आधुनिक काल में ही टुसु गीत का प्रभाव देखने का मिलता है।

हामर टुसु दक्षिण जाति,
संगे चाकर छः जना,
फिखार बेला देखाय आनब
सावतालडीहेक कारखाना ।

पड़ोस में रात्रि जागरण करके अंतिम समय अफसोस करके गीत गाते है।

तोदेर घरे टुसु छिलो,
करिलो आना गना,
एवार टुसु चोले गेले
करबि लो द्वारा माना,

टुसु मातृगृह में परम सुख एवं आदर के साथ एक महीना काटकर ससुर घर की बात भुल गई है। अब मकर दिन बिदाई को दिन आया । विरह, वेदना, छोड़कर टुसु माँ के छोड़कर ससुराल जा रही है। तब माँ बेलती है। देवी का प्रतीक मानते है।

एतो दिन रहिल टुसु माँ बोले आर डाकिलीना,
जाऐक समय रगड़ लेलि माँ के छोड़े जाबो ना।

बिदाई का पर्व शुरू हो रहा है इसलिए बेटी बिदाई का गोयना-लाठी परिपाटी लाना पड़ेगा। इसलिए

बोम्बई होइते आनब गो जुगल चुड़ी,
पुरूलियाते गड़ाबो गोयना ढ़ाकाक साड़ि,
कोलकाताते रंग करायके टुसु धन के पराइबो।

मकर पर्व का दिन सुबह से ही टुसु बिदाई के लिए गाना जाता है।

तीरीस दिन रहिले टुसु तीरीस टी फूल पाले गो,

आर को राखिते पारी, मकर हेलोउ बादि यो।

आज ही का दिन टुसु माँ के घर छोड़कर ससुरघर में जाती हैं।

जले हेलो जले खेलो,
जले तोमारा कोने आहो,
मने-मने भाभी देखा,
जले हामर ससुरधर आहो।

टुसु मणी को पानी में विसर्जन देने की इच्छा नहीं है फिर भी देना पड़ता हैं। टुसु पर्व ऐसा पर्व है जिसमें कोई व्रत नहीं है। केवल प्रकृति स्वरूप सृष्टि का कारण मानकर घर-घर में धन लक्ष्मी को भंडार परिपूर्ण की आशा में टुसु लक्ष्मी देवी का प्रतीक मानते हैं।

झारखण्ड नामकरण

नामकरण मनुष्य जीवन का महत्वपूर्ण संस्कार हैं। नाम का प्रभाव उसके चरित्र में प्रकाश होता हैं। मनुष्य भाषा का प्रयोग करते हुए अपने मन का भाव प्रकाशित करता हैं। कुछ ऐसे शब्द गड़ता है जिससे मन के अंदर के बुराई एवं अच्छाई के भाव प्रकट होते हैं। साथ ही साथ उसके संबंध में वही धारणा बैठ जाती हैं।

ऐसा ही जाति का अलग-अलग संस्कार के अनुसार नामकरण होता हैं।

अंग्रेज जाति का विश्वास है कि वे अंग्रेज हैं। इसलिए वे कुछ भी कर सकते है किन्तु भारतीय जाति की आदिकाल से ही सुनने की आदत हो गयी है कि वे कुछ नहीं कर सकते हैं। इसलिए हीनमान्यता भाव से विश्वास टूट जाता है।

संस्कृति की विभिन्नता से नामकरण का वशिष्ट भी भिन्न-भिन्न पाई जाती है। कुड़मी जाति में नामकरण के लिए कोई विशेष अनुष्ठान नहीं होता है। कुड़माली संस्कार में बच्चे के जन्म के नौवे दिन अर्थात् नारता दिन माता-पिता, अभिभावक, आत्मीय, कुटुंब, प्रतिवेशी गणें द्वारा नामकरण किया जाता है। अभिजात समाज अथवा उच्चवर्गीय समाज व्यवस्था में जैसे डाकनाम, अच्छा नाम आदि का प्रचलन नहीं हैं।

कुड़मी समाज के नामकरण संपूर्ण निजविशेषता होता है। वर्तमान विभिन्न संस्कृति का नामकरण का प्रभाव पड़ गया हैं। क्योकि यह जाति बंगला, बिहारी, उड़िया विभिन्न जातियों के संपर्क में आयी हैं। फिर भी इसकी अपनी विशेषता देखने मिलती हैं। संतान जन्म के पहले ही माता-पिता में हंसी-मजाक होता है कि लड़का होने पर नाम क्या होगा या लड़की होने पर नाम क्या होगा ? किन्तु इसमें लक्षणीय विषय यह है कि लड़का का नाम माँ श्रखली है। और लड़की का नामा पिता रखता हैं।

आदिकाल में जब यह जाति जंगल में रहता था उस समय की जीवन-यात्रा दूसरा था। भूत-प्रेत, डायन-जुगिन, चुड़किन, बीमारी का भय था और मनुष्य का आत्मरक्षा परमकर्तव्य था। इसलिए संतान को उस भय से बचाने के लिए नामकरण करने का ढंग अलग था। रेंघा, तिला, फुसा, मोड़ा ढूलका भूता।

कुड़मी जाति का कृषि-कार्य ही एकमात्र उपया था। इसलिए खेत खलिहान में काम करते समय बच्चों का जन्म होने पर नाम खमारा, खेता........। प्राकृतिक परिवेश की विशेषता रहने नाम- मेघा, बादला, निरसा........। जंगल में रहने के कारण अपने प्राकृतिक संतान को जंगली जानवारों के साथ तुलना करके नाम रखता था- लकड़ा, बाधु, सियार, प्राकृतिक सुंदरता से कुड़मी बच्चों की तुलना पेड़ से रखता था- शहराई, नीमा, अर्जुना, बेली, करंबरी.......। दिन और महीना के अनुसार नाम प्रचलित हैं- मंगरा, बुधा, लखा, शुकरा, संभा, रबा, अधना, पूषा, फागु, चेता, भादोरा, सरावन, आषाढ़, कार्तिक, माघ........। कोई त्योहार के समय जन्म लेने पर - करमा, करमी, भादु, भदिया, टुसु, टुसिया, जितु, बारनी, रहनी, धरमा, मकरा, भगता, संजता, उपासी, फलारा......। कुड़मी जाति का नाम कारण वास्तमुखी होता हैं।

अंगहानी लेकर बच्चों के जन्म लेने पर- वुचा, खढ़ा, लेदु, कंका, लेल्हा, भुटका, लम्बा, गेंद, छुटु, टुमका, भुलका, चड़कु, पेंड़क, काला, गोरा, होंसा, काजला।

विहाक नेगाचारी

जन जाति कुड़मी गोष्ठि का कुल (81) इकासी गोष्ठि है। विवाह समाज व्यवस्था में कुल परम्परा तथा परिवार के अस्तित्व की रक्षा करता हैं। विभिन्न समाज व्यवस्था में विवाह संस्कार का विधि अलग हो सकता हैं। किन्तु लक्ष्य एक ही है। कि योन सर्म्पक का सामाजिक मान्यता जनजाति कुड़मी का गोष्ठि संख्या अधिक इसलिए है क्योंकि समाज व्यवस्था में विवाह प्रथा का कुछ अपना नियम मान कर चलता जैसे अपना गोष्ठी में विवाह नहीं होती है। कुड़मि जाति में विवाह व्यवस्था इन प्रकार है-

(1) माड़ुवा विवाह :- इस प्रकार के विवाह कुड़मि समाज में श्रेणी माना जाता है। जिसका शुरूआत आखान यात्रा के दिन या अन्य शुभ दिन देखकर परिवार में लड़का-लड़की शादी योग्य होने पर कुटुम्ब द्वारा टवआ ठिकाना चलता है। सही टवआ होने पर गाँवेक माहतो या अपना कुटुम्ब के माण्ध्यता से लड़का-लड़की पर वर-केनियाई देखा-देखी चलता है। दोनों पक्ष राजी होने पर विवाह कार्यक्रम आगे बढ़ाता दिन ठेकान होता हैं।

रेवार :- छेंका-ठेकान दिन में पात्र पक्ष का कुटुम्ब द्वारा लड़की को एकटुम अलंकार देकर विवाह पक्का होता है।

वर देखा :- उसी प्रकार पात्रि पक्ष का कुटुम्ब द्वारा को अँगुठी या घड़ी देकर विवाह के दिन पक्का करते है। उसी दिन से पात्र पक्ष पात्री पक्ष का निमंत्रण आदि चलाता है। विवाह के दिन दोनों घर पर पृक्षक नेगीचारी होती है, जिसका पुरोहित का काम लड़का का बहनोई एवं लड़की का बहनोई करता है।

क) लड़का पक्ष :- माड़ुआ बांधा जाता है। माड़ुआ खुँटी, बांधकुड़ा आदि नेग होता है। "साजनी डाला" में सार-भार आई मायो का कपड़ा, लड़की का श्रृंगार, चुकडी, चुकड़ियाँ, चेंग मछली, इंदूर माटी, मुसकुड़ा, सुता खण्ड, दामड़ा, का सार भार, बाताया, मिठाई की हंडी, माहतो हाड़ी। आम विहा, अम्लो खावा, नेग समापन करने के बाद बारात गाजा-बाजा के साथ केनियाई घर की ओर प्रस्थान करता है।

ख) लड़की पक्ष :- केनियाई घर में भी माड़ुआ बांधा जाता है। माड़ुआ खुँटी, बांध कुड़ा, बड़ि पाड़ा सभी आयोजन करके वर का आने का अधीर प्रतीक्षा किया

जाता है। सभी नेगीचारी में कुड़माली में गीत या जाता है। जिसका आलोचना बाद में रखेंगे। केनियाई गाँव के सीमा पहुँचने पर बारात सब खुँट-खाट के द्वारा उस गाँव के देवी-देवता को आराधना करता है। गाँव घुसते ही धुमकुड़ियाँ के रक्षक घाघर को सार-भार दिया जाता है। केनियाई घार के दुआर लगते ही "गुआटिका" को नेग होता है। माड़ुआ तल में चोक पूरा जाता है। डाला में बेठाकर केनियाई को महुआ माड़ुआ में लाई जाती है। सजनी डाला में सार-भार लाया जाता है। चमक चुका का सीपना एवं "सोनापितर" नेग होता है। बाद में महुआ विहा के लड़की दल महुआ गाछ तल जाती है। वहाँ से आने पर माड़ुआ तर सिंदूर दान नेग द्वारा कुड़मी जातिका विवाह पूरा होता है। दूसरे दिन कुड़मी जाति में मरजाद रखने का प्रचलन है। जो कि वर्तमान आधुनिक कार्य संस्कृति में मरजाद प्रथा उठते जा रहा है। मरजाद अनुष्ठान में बकरा, खाली बली होता है एवं भोज का आयोजन होता है। जिसका देखभाल गाँव के माहतो या सभी दिवान अर्थात आदिवासी स्वशासन विधि से संगठित परिषद् द्वारा निगरानी होता है। शाम के समय चुमान बांदापन क्रिया होता है। खीर खावा बाहर-भीतर नेग किया जाता है। तीसरे दिन सुबह बर-केनियाई का बिदाई होती है। केनियाई के साथ बुढ़ी औरत (लगदीन) बहन सहेलियाँ या भाई जाता है। बर घर पहुँचने के पहले गाँव ग्रामथान, मड़पथान में आशीर्वाद लेकर दरवाजे में गुवाटीका, गुड़ पानी खिलाया जाता है। उसके बाद माड़ुआ में चुमान, मुँह देखान, बड़ा-बड़ी नेग होती है। फिर शाम को चुमान बैठता है। वर-केनियाई घर घुसते समय वर के बहन सब दुआर छेका नेग होता है। इसके बाद खार छाड़ी घोटी लुका नेग के लिए तलाब जाते है। तालाब से आने के बाद दुआर में पैर धोवा नेग होता है। उसी समय ससुर, भैसुर का परिचय दिया जाता है।

माड़ुआ विवाह कुड़मी का आदिम जाति का परिचायक है। वर घारेक माड़ुआ में आम डालि एवं केनियाई घारेक माड़ुआ में मड़ुआ डालि गाड़ि जाती है।

(2) गलट विहा संथाली में "बापला" :- इसी प्रकार विवाह अदला-बदली अर्थात् जिस घर में बेटी जाती है। उसी घर से बेटी लाया जाता है।

(3) सांघा विहा :- विधूर पुरूष एवं विधवा स्त्री की सांघा विहा होती है। इस प्रकार विवाह में लड़की घर का कोई खर्च नहीं होता है। विधूर पुरूष सारा खर्च लेकर

आते है। एवं दोनों गाँवों के माहतो या मांझी के उपस्थिति में सांघा विहा कार्य समाप्त होता है। सांथाली में सांघा बापला कहते हैं।

(4) कईड़ा विहा :- जब किसी अविवाहित पुरूष के साथ बिहेली छोडवी, विधवा की सांघा होती है। उसे कईड़ा विहा कहते हैं। इसमें अविवाहित पुरूष आम विहा के बदले में केला गाछ को बिहा करते है। उसके बाद केनियाई के घर जाते है। एवं सांघा जैसा कार्य समाप्त कहते है। केनियाई पर नहीं लगता है।

(5) वेदकाड़ि विहा (साँवताली में टुनकी दीपल वापला) :- इसी प्रकार के विवाह गरीब लोगो के बीच होता है। केनियाई को वर के घर लाकर सिंदूर देकर शादी रचा दी जाती है।

(6) घर जमाँई विहा :- इस प्रकार शादी पुत्रहीन व्यक्ति शादी तय होने पर वर के गाँव कुड़मी स्वशासित समाज व्यवस्था के देख-रेख में वर को ले आते है एवं लड़का को ससुराल में रहना पड़ता है। संताली में घदी जावाँय वपला कहते हैं।

(7) राजी खुशी विहा :- इस प्रकार के शादी के लिए राजी होने पर गाँव के महतो-माँझी, के पास जाते है। महतो या माँझी देवान गाँव पंच के साथ लड़की के घर जाते है एवं सर्वसमक्ष औपचारिक शादी रचा दिया जाता हैं। संथाली में राजा-राजी वापला कहते हैं।

(8) प्रेम विवाह :- लड़का-लड़की जब प्रेम हो जाता हैं किन्तु अभिभावक राजी नहीं पर महतो-माँझी एवं गाँव के पंच द्वारा शादी रचा दी जाती हैं। वर के पिता को भोज देना पड़ता है।

(9) भेगेड़ विहा :- इस प्रकार शादी में लड़का-लड़की कुड़मी जनजाति कविला के घर से भाग जाती है। कुछ दिन जहाँ-तहाँ हैं। बाद में कुड़मी जनजाति परम्परा गत पंचो के उपस्थिति में सिंदूर दिलाकर विवाह सम्पन्न होता हैं। दोनों पक्ष को गाँव में भोज देना पड़ता है। संथाली बहारेदर वापला कहते है।

(10) सिंदूर घंसा विहा :- जब लड़की के मन पसन्द लड़का के साथ अभिभावक राजी नहीं होता हैं तो लड़का सुयोग देखकर लड़की के माथे पर सिंदूर घंस देता है। उसके बाद पंच द्वारा लड़का-लड़की को दाम्पत्य जीवन व्यतीत करने का अनुमति मितला है। संथाली में इतुर वापला कहते है।

विहागीत के दुई भाग आहेक

1. एक बर पक्ष के गीत :-

2. कन्या पक्ष के गीत :- केनियाई पक्षके गीत करूण रसेक कारण भाई बाप बेटिके आदर यतन कई के मानुष करिके आज परेंक घार जाती केसन रहति माँई बापेक चिनता रहई।

क) बर पक्ष के बीत :- बर पक्षेक गीता सब गुली हाँसि-खुसी अनेक गीत बेटाई बहु आनतेक नउवा कुटुम हेतेक। दुइअ पक्षेक गीतेक नमुना देईह ....।

ख) बड़िपाड़ाक गीत :- वर जेदिन विहा करे जात से दिन बाँसेक छाताई काकी निखा बड़ी पाड़न आर गीत गावत। केनियाई घारे एके रीति हेवेक।

ग) तेल माखा गीत :- जेदिन केनियाई के लगन शुरू हेवक लगन धरातेक सेंई दिन हेरेद तेल माखाई के गीत गावत :-

हरदि पिसते भोजी घामी गेला ।।
भोजी बड़ सुखी भेला ।।
भोजिक भाइके कहि पाठाई देहाक आनि देताक कामिनी
डलाइ देतेक वियानि, भोजिक भाई जनमेक टुअर लोगों काँहा
पावतेक कामिनी डुलाई देतेक विअनि।

3. पानी सहा :- ऐहे नेंगटा वर आर केनियाई दुईअ घारे हेईक। वर आवेक आगुई पानी सहे जात दुईटि कुँवारी छोवाई दुईटि छअअ होंड़ी काँखे लेअंक बाँध जात पानी के टाँगी या छुरा देईक काटन आर गीत गावत।

गीत :- पानी सहेलाई गेलिअ पानी नी मिलेक फानला पानी नीमिलईक,
तर ऐसन भाँगल कपाल रे फानला पाना निमिलईक ।।

4. महुआ विवाह :- वर आवेक बादे ऐहे नेगटा हेवईक महुआ गाछेक सुता बेधत भाई, मसी, काकी, फुफु, जेठीनिखा थुक देईक गुड़ मिलाई करि अम्ल खावआ नेंग कहतिक ऐहे समये

गीत :- भाई गो बेसे गो देह अम्लपानी।
खाई गो अम्लपानी दिहा गो माञ आसिस ।।

5. सोना-पितर :- पहिले माड़ुआ तरे चखपुरइत केनियाई के डाली साजि के

बाहरावथिन अकर बादे ससुर घारले जेतना गहना आवतेक ऐके-ऐके पिंधावत।

क) गहन पिंधाइते ससुर खुजुर –मुजुर । काहे सुसुर खुजुर – मुजुर।।
तोरे घारे बाहिर भितर होती है। देखी नयन जुड़ाउत ।।

ख) देंखे तर पाते खालाई गहना आन लाहात ।
बप हामर गनेश ठाकुर गने बा लाहात है।।

6. सिंदूर दान :- एहे नेगटाई केनियाई के हेरेद गाबल साड़ी पिंधायेक वर अनियाई दुईअ छामड़ा तरे मुँहा–मुँही बसत वर कनियाई मुड़े सिंदूर घंसी देयिक।

मिआ भाल सिरे माला बदल करबे।
पाछे मुसलमान हेके, पाछे खिरीस्तान हेके ।।

7. केनियाई दान :- केनियाकर बाप या काका केनियाई दान करे बसत पुरूब मुँहे।

क) केनियाई बाप वेसेलाहे पुरूब मुँहे।
केसन देखाय चाँद लेखे,

ख) बाप हामर बेसलाह बेटी दान करेलाई
बेटी दान करेक खने आँइखे गिरे लअर
आने गो गातेक गामछा पँअछअब लअर गो।।

8. चुमान गीत :- वर केनियाई के छामड़ा तरे बसाईके चुमान हेवईक थारी, हाँड़ी, गागरा जेटा पारत दान करथिक ।

गीत – बेरा उठे खीनी – खीनी बापके नींद भाँगई नी।
उठे बापु चेतन कर मके जाला दिसना ।।
निहि खईज जमि–जायगा निहि खजअ घार ।
भँइ जे खजब बापु जोड़ा रे गागरा ।।

9. दुआर छेंका :- चमानेक बादे वरेक बहिन सभें दुआरे छेंकत ।

गीत – फालना जाईगाक बड़ खेत टा देखाई देवे तवे दुआर छाड़ देवे।।

10. विदाई गीत :- विहा करूण रसे भरा हेवेक कराय काँखे लालन–पालन कईके बेटी बड़अ हेला आईज परेक घार जाती ना जाने आज केसन रही ।

क) कुम्हार घारेक अरिसारी गो

तेली घारेक सरिसा निंगोछिआ बाहिर करें गो इ जनमेक पारा ।

ख) आगु हुला देले बेटी गो

पेछुई देले जाईएकर बेला बेटी गो देले समुझाय ।।

मरण संस्कार

कुड़मी जनजाति मरने के बाद मिट्टी या जलाने का प्रथा हैं। साधारणतः अविवाहित एवं छोटा बच्चा तथा विशेष रोग ग्रस्त व्यक्ति को मिट्टी दिया जाता हैं एवं शेष को जलाया जाता हैं। श्मशान ले जाने के पहले घर में तुलसी पिढ़ाह पर "हाडे हरईद" नेंग किया जाता है। पति मरने से पत्नी लोहा (विवाह के समय जो पहनाया जाता है) हाथों की चुड़ियाँ फोड़कर शव में दे देती है। पत्नी मरने से पति पत्नी को अंतिम सिंदूर देता है स्त्री मुखाग्नि नहीं करती हैं। शव जलाने के पहले मुखाग्नि पुत्र, पोत्र, भतीजा करते हैं। स्त्री मुख्याग्नि नहीं करती हैं। शव को नया कपड़ा ढ़ककर उसका व्यवहारिक वस्तु लाठी, वस्त्र तम्बाकु, हुका, चिलमु......... सारी चीजें दे दी जाती हैं। क्योंकि कुड़मी जनजाति के विश्वास है कि आत्मा जहाँ जाती हैं वह वस्तु खोजती हैं। शव के साथ जानेवाले को "धाटुवा" कहते हैं। प्रत्येक लोग एक टुकड़ा समय " काँटा दियारी" करने की प्रथा हैं। मरण के तीसरी दिन गाँव के तालाब या नदी किनारे घाट में तेलखैट नेंग होता हैं रात में घाट जाने वाले लोगों को "तीता भात" दिया जाता हैं।

कुड़मी जनजाति का दसर दिन में कामान घाट क्रिया होता है जिसमें मृतक के पुत्र, भतीजा सिर मुड़वाते है एवं मामा घाट उठाते हैं। कामान घाट से घर पहुँचने पर "छाहईर भीतराइन" अर्थात् मृत्यु स्थल पर पानी ढ़ालकर किया जाता हैं। रात को काँधकाठिया भात दिया जाता हैं। बिना नमक का खिचड़ी या सादा भोजन आजकल "बुटसिद्धमुढ़ी" आदि दिया जाता हैं। श्राद्ध क्रिया मृत-आत्मा का अंतिम संस्कार माना जाता है। श्मशान घाट से आने के बाद से मृतक परिवार-गोष्टी का अधुत माने जाते है। तेल माखना, सिंदूर पहनना, या पूजा अनुष्ठान में भाग लेना वर्जित माना जाता है।

ग्यारहवाँ दिन में जनजाति कुड़मी का सभी देव-देवी, ग्रामथान, जाहिराथान, सरणाथान, में मृतक सह पूर्वजों का उद्देश्य श्रद्धानुष्ठान क्रिया होता हैं। सम्बंधित गाँव के महतो या मांझी, देवान तथा पंच परिषद कुटुम्ब संबंधी द्वारा श्रद्धानुष्ठान क्रिया सम्पन्न होता हैं एवं सामर्थ्य अनुयायी भोजका व्यवस्था किया जाता हैं। उसी दिन शाम को "गुड़ीहाथ" क्रिया होता है एवं मुरगी, बकरा काटकर रक्त देखा जाता है। इस प्रकार कुड़मी जनजाति का मरण संस्कार ग्यारहवाँ दिन तक समाप्त होता है।

आदिम संस्कृति खदा

मुसलिम सम्प्रदाय ईश्वर को अल्ला कहते है। खृष्ट सम्प्रदाय जीशु को हिन्दु का भगवान का भगवान को समक्षा जाता है। किन्तु यहाँ अल्ला याशु भगवान रूप से सम्पूर्ण विपरीत।

खदा के बारे में कुछ आलोचना नीचे किया गया।

सर्वप्रथम "खदा" शब्द किस भाषा का या शब्द कोष का है, यह देखना जरूरी समझते है। खदा द्राविड़ गोष्टिका आदिवासी कुड़मी किसान समाज में बुल प्रचलित है। पत्थर के ऊपर धातु पात्र में खुदाई करके विभिन्न प्रकार का चित्र भिन्न-भिन्न भाषा का लेखन चित्र किया जाता है। उसी प्रकार कुड़मी सम्प्रदाय आदिम काल से "खदा" निजस्व संस्कृति है।

1. 'खदा' शब्द कुड़मालि भाषा का मूल शब्द है। खदा को उलकी भी कहा जाता है। कुड़मी समाज में खदा महिला का अंग का भुषण या अलंकार जीवन काल में एक ही बार लिया जाता है। इसका कोई परिवर्तन नहीं होता है। विशेष-विशेष क्षेत्र में पुरूष का अंग भी लिया जाता है। अलंकार के रूप में दैहिक सौन्दर्य वृद्धि साधन। पुरूष देह का विशेष अंग में भागवान का नाम या गोष्टिक विशेष चिन्ह स्वरूप होता है।

2. "खदा" अलंकार हाट बाजार में क्रय-विक्रय नहीं होता है, यह विचित्र अलंकार शरीर पर खुदाई किया जाता है। विचित्र बात यह है कि आदिम काल से कुड़मि समाज ज्ञान विज्ञान में शिल्प कला में चित्र की निर्दशन मिलता है।

3. "खदा" केवल मातृ अलंकार नहीं विज्ञान सम्मत गुणगुण अर्न्तनिहित है। वात व्याधी, व्यथा पीड़ा आदि रोग का चिकित्सा रूप में समाज में प्रचलित है। हाठ, जानु, कोमर से आराम लाभ मिलता है। स्त्री पुरूष सभी को खदा रोग मुक्त रखता है।

4. "खदा" विशेष जन गोष्टिका एक सांकेतिक चिन्ह व्यवहत होता है। खदा विभिन्न प्रकार संकेत चिन्ह, नक्सा जिसमें आसानी से पता लग जाता है। गोष्टि विवाहहिता जैसे हिन्दु रमनीका माथा पर सिन्दूर । कोई उच्च सम्प्रदाय में खदा का प्रचलन नहीं है। केवल झाड़खण्डी है। वर्तमान समाज में खदा प्रायः लुप्त किन्तु एके बारे पुरा लुप्त नहीं हुआ है। इसका कारण अनुसंधान करने पर यह पता चलता है। आदिवासी समाज में आर्य संस्कृति का अनुप्रवेश द्वितीयत आदिवासी समाज का भाखि चारी आचार, धर्म, कर्म की हीन दृष्टि में देखा जाता है। समय के परिवर्तन के समय प्रगति शील चिन्ता भावना तथा संस्कृति का पतन एवं उत्थाना आदिवासी समाज में हीन मन्नता आगामी भनोभाव के फल स्वरूप भाषा, साहित्य संस्कृति रीति रिवाज वर्जन करके आर्य संस्कृति की ओर ग्रहन करने का मननशीलता परिलक्षित होता है।

कल, कुड़मि कड़ा सावताल आदिवासी समाज में वरपन का प्रचलन नहीं था। आर्य समाज के प्रभाव आज भयंकर रूप धारन करके आदिवासी समाज व्यवस्था को ध्वस्त कर दिया है। वरपन बंध करके के सरकार को कानुन का आधार लेना पड़ राहा है। वरपन विवाह तथा आदिवासी समाज व्यवस्था उच्चचिंता का पिरचालक या नीच चिन्ता। इस प्रकार वरपन विवाह संस्कृति के स्वरूप "खदा" आदिवासी समाज में विज्ञान सम्मत उन्नत । चिकित्सा विज्ञान काल काक विवर्तन अपना अच्छा उन्नत संस्कृति छोड़कर असमंजस पड़कर दियाग्रसत "खदा" चारी के और एक अन्य रूप इस समाज में प्रचलन देखने को मिलता है। जिसका नाम "डामना" है। वर्तमान (Aecupunetur) आकुपांचार चिकित्सा के साथ डामना का तुलना किया जा सकता है। आधुनिक समाज व्यवस्था के चिकित्सा विज्ञान शिशु को "पोलियो भेकसीन" टिका आदि दिया जाता है। उसी प्रकार आदिवासी समाज में शिशु जन्म के 21—30 दिन के अन्दर डामना दिया जाता है। शिशु का तलपेट पर काला शिरा में गरम हसुआ का दाग काटा जाता है। गैइठा या कुलकाटा का आग से हँसुआ का

अग्रभाग गरम करके शिशु को खाटि सरसों का तेल माखकर सावधानी पूर्वक छुका दिया जाता है। समाज में "डामना" अभिज्ञता विशेष व्यस्कता महिला महिला वे काम करते है। खछा जैसे मनुष्य को बात व्यधी से रोग से रक्षा करता है। डामना भी बात व्यधी पेट व्यथा से रिहा करता है। आज का आकुपंचार और कुड़मी समाज का पुराना डामना में कोई अंतर नहीं है। अनुसंधान से पता चलता है। अन्य समाज में जिस हार में पेट दर्द बातव्याधी प्रसार है। कुड़मि समाज में अंततः कम होता है। डामना कुड़मालि शब्दकोष का अपना है। इसका किसी भी भाषा में दूसरा शब्द नहीं है। इसलिए पाठक को समझने में कठिन हो सकता है। विभिन्न भाषा में कुछ शब्द है। जो उसी को अपना लिया जाता है। डामना केवल तलपेअ अर्थात नाभि के मूल के क्षेत्र में दिया जाता है। कभी-कभी पैर हाथ का ग्रंथि में या कपाल या शिरा पर डामना दिया जाता है। ललाट पर गरम हँसुआ अग्रभाग स्पर्श में शिशु का कोई हानि नहीं पहुँचाता है। सूई देने, देनेपर जो कष्ट अनुभव होता है। उसी प्रकार इसमें भी थोड़ा कष्ट अनुभव होता है। विभिन्न समाज व्यवस्था में अपना पहचान होता है। वे लोग जो परिचित नहीं है। इस पर भ्रम तथा अप्रचार करके हीनमन्नता का बीज बुनती है।

कुड़माली चारी
जनम संस्कार

किसी जाति दीर्ध्यकाल से ही एक आचार, रीति रिवाज पर चलती है तो परंपरा वंशनुक्रम से पीढ़ी-पीढ़ी तक देख सीखकर संस्कार बन जाती है। कुड़मी जाति धर्म विश्वासी एवं धर्म भीरू है इसलिए कुड़मी जाति के जीवनधारा में स्वतंत्र वैशिष्ट परिलक्षित होता है। जनम् संस्कार कुड़मी जाति का प्रतिवेशी आदिम अनगुष्ठी से मिलता-जुलता हैं।

साधारणतः कुड़मी जाति संख्याधिक निरक्षर होते हुए भी दीर्त्यकाल से अभिज्ञता ज्ञान से ही शरीर सम्पर्कित ज्ञान में आधुनिक विज्ञान से पीछे नहीं है। इसका प्रतिफल संस्कार एवं रीति-रिवाज पर विज्ञान संगत प्रभाव देखने मिलता हैं।

आध्यात्मिक विचार से मानव देह का गठन क्षिति, अप, तेज, मरूत, वोम जिसे

पंचभूत कहते है,

प्राणी चार प्रकार से जन्म लेते हैं।

(क) अन्तुज - सांप एवं पक्षी (ख) स्वेदज - क्रीड़ा, पतंग, मच्छड

(ग) अद्भिद - वृक्ष, घास, झाड़ी (घ) जरायुज - मानव एवं पशु

स्त्री का श्रृतुकाल में सहवास संभोग द्वारा पुरूष का शुक्र स्त्री का जरायु में संयोग होता है। शुक्राधिक अधिक होने पर पुरूष, रक्ताधिक स्त्रीय बीज अधिक होने पर तथा (पूंबीज = स्त्रीबीज) होने पर क्लीव बच्चा जन्म लेता हैं। स्त्री का ऋतुकाल **16** दिन स्थायी रहता हैं। सहवास के समय सम संख्या जोड़े दिन में लड़का और विषमसंख्या विजोड़ दिन में लड़की होती हैं।

ऋतुकाल के समय अंधकार घर में रहने का नियम है एवं सर्वप्रथम अपना पति या सुर्यदेव को देखती है क्योंकि स्त्री कामातुर होकर जो स्वरूप दर्शन करती है उसी प्रकार संतान जन्म होती हैं। इसीलिए वे विचार विज्ञान संपन्न कहा जा सकता है। शुक्र एवं जौनी रक्त संयोग होने का दिन से **270** से **330** दिन तक संतान मातृगर्भ में रहता है। इस समयकाल में स्त्रीयो को बड़े ध्यान से खान-पान व भारी काम करना होता हैं।

शिशु का स्वास्थ्य माँ के स्वास्थ्य पर निर्भर करता है इसलिए माँ को विटामिन, सहज पाचनशील खाना दिया जाता है जो गर्भधारण के समय स्त्री का शरीर सुन्दर दिखता है।

कुड़माली रीति में प्रथम गर्भधारण के समय आने पित्रालय (मायके) से एक विशेष सुगुण दिन देखकर मौसी, पिसी, काकी या अन्य कुटुम्ब पिटन, मिसरी, फल आदि विटामिन युक्त खाना लाकर खिलाती है जिसे 'स्वादभक्षण' या 'नमासी' कहा जाता है और प्रतिबैसी कुटुम्ब को जानकारी होता है। प्रसवकाल में गाँव के बुढ़ी लागों या इससे संबधित दाई को बुला लिया जाता है। दूसरा दिन प्रसूति को ओलसिद्ध खने दिया जाता हैं। शिशु को खाटि गाय घी से मालिश, बाद में सरसों तेल से मालिश करके सूरज किरण में रखा जाता है। माता को रसुन तेल मखाया जाता है। रसुन विज्ञान सम्मत रोग प्रतिरोधक है। तीसरे दिन धान का खई, कुरथी दाल या सद्ध खिलाया जाता है नवें दिन प्रसुति नहाती है जिसे नारता कहा जाता हैं। लड़का होने

पर 6 या 8 दिन में लड़की के दिन 7 या 9 दिन में नारता होता है।

मायके से नया कपड़ा लेकर गतिया लोग पहुँचते है एवं सबको नया कपड़ा पहनकर नाखुन, बाल काटा जाता है। इस दिन से प्रसुति अशुद्ध से शुद्ध मानी जाती है। एवं घर के काम काज में हाथ बटाती है। कुड़माली जन्म संस्कार रीति में ब्राह्मन का अनुप्रवेश नहीं हैं। 21 वीं दिन से प्रसुति को सभी अनुशासन से मुक्तकिया जाता हैं। वंश का प्रथम संतान होने पर धरम ठाकुर के मानत करके केश छोड़ दिया जाता है। लड़का के लिए 6—8 महीना लड़की के लिए 7—9 महीना के बाद भात दिया जाता हैं, जिसे मुँह जुठान, भातखवकी, अन्नप्रासन, भुजान आदि कहा जाता है।

जोड़ा महीना में दाँत निकलने से शिशु को 'मगरा सिनान' अर्थात् फूल के ऊपर से पानी डालकर बच्चे को नीचे नहाया जाता हैं। धर्म पूजा मानसिक नहीं परिशोध होने पर विहा नहीं होता है।

कुड़मालि शब्द कुधि

"क"

कँका - गूँगा

कँइच - कमर में खोंसा हुआ कपडा का अश

करम - काम, कर्म

कचटा - मसला हुआ, मसलना

कचड़ा - महुआ फल

केंचा - केंचुवा

करट - करवट

करिल - बाँस का अंकुर

कसुर - दोस करना

काईट - तेल का गंदा जाम हुआ।

काँकई - कंधी

काछड़ा - किसी वस्तु को उठाकर पटकना

काटा - काटना

काटरा - कटारी

काड़ावजर - जोर से धक्का मारना

काड़ामाथा - कड़ा वस्तु, मन्द बुद्धि

काँथ - दिवाल

कानगुआ - कान के अन्दर का मैल

कानि - कपड़ा का टुकड़ा

कामइना - एक प्रकार का गाली विशेष

कायर - कापुरूष

कालहा - ठंडा

कायर - कापुरूष

कालहा - ठंडा

कदकदा - प्रफुल्लित

किशकिशी - मन में गुस्सा होना

काँड़ि - ढेंकी (धान कुटने का एक प्राचीन यंत्र, जो लकड़ी का बना होता है।)

कटास - एक जानवर विशेष जो बिल्ली जाति का माना जाता है।

काना साग - एक प्रकार का साग

कुथि - किसी वस्तु का अधिक मात्रा में जमा करना, ढेरी। समष्टि

किरा - शपथ

काँयाँ - कृपण

काड़ानी छाति - छत्तात विशेष

कसी - अधिक मात्रा में

कुरथी - दाल विशेष

किना - क्रय करना, क्या

कदर - यत्न करना, इज्जत करना

कनी–कनय- पेड़ की पतली शाखा

"ख"

खँधा - घोंसला

खड़हा - लँगड़ा

खाँखार - जीभ में जमा मैला

खखरखचा - रूखड़ा

खँदड़ - कोटर

खेंखरा - दुबला-पतला

खाड़तरा - नंगा बदन

खपड़ा - खपड़ैल

खापरी - पत्रा विशेष

खरखरी - चलाक

खरखसा - कर्कश

खाँकड़ा - केंकड़ा (बड़ा जाति)

खाँखड़ि - केंकड़ा (छोटा जाति)

खाँची - टोकरी

खपयर - मुड़ि भूँजने का बरतन

खेपटि - निरर्थक

खामचा - मुट्ठी भर

खमाइर - अनाज झाड़ना स्थल

खिजा - तैयार

खेजा - अंश, भाग

खिजला - विरक्ति

खील - हल जोतते समय छुटा हुआ भाग।

खुखड़ी - मुरगी

खुखड़ा - मुरगा

खुजली - खुजली

खुड़ा - चाचा

खुनस - बहाना

खुपा - पागल

खँपा - केश का गोल बना हुआ भाग

खेंसा - खोंसना

खेड़हा - खरगोश

खड़िया - एक जनजाति

खिरा - कंकाड़ि

खोट्ठा - एक मिश्रित भाषा

खाटोया - खटने वाला, काम करने वाला।

खेमटा/खेमटि - लोक नृत्य

खोआड़ - एक विशेष वृक्ष का लड़की का जला हुआ भाग

खाटाली - मजदूरी

खरन - सुर बाँधना (बाद्य यंत्र का)

खेदा - हाँकना

खँयछा - आँचल

खड़हा - लँगड़ा

खाइट - खटिया

खेंचरा - तितर-बितर करना

खल - मन में पाप

खरिस - एक विषैला सर्प जिसका फन होता है।

खुँटा - स्तम्भ

खासी - खस्सी (बकरा)

खलास - मुक्ति

खिदखिदी - छोटा-छोटा टुकड़ा

"ग"

गड़ा - जलाशय
गढ़ा - बनाना
गाँयत - गैंता
गत - सुविधा
गाईछ - बाँधना
गड़ान - ढलान जगह
गोंजा - ठूसना
गुँजा - शष्य विशेष
गतर - शरीर
गेंधा - खराब पानी
गमक - गंध
गरया - आदिम पूजा विशेष
गरह - ग्रह
गसा - फल पकेन के पूर्व
गरा - रंग विशेष
गसुआ - भोजन के अभाव में फल का असमय पक जाना।
गईरा - बड़ा घोड़ा
गहला - भारी वस्तु को घसीटते हुए ले जाना।
गाभड़ा - असमय गर्भ नष्ट होना।
गाजाड़ - झाड़ी-झुरमुट
गेंजिया - कमर में बाँध करने रखने वाला पैसे की थैली।
गादर - पका फल (पकने के पूर्व)
गड़ुहा थाल - थाली जिनका गर्त अधिक हो।
गदाल - भीड़-भाड़।
गादुआ (गादे) - अतिरिक्त
गाधरा दूध - गाय, बकरी, भैंस आदि का प्रसव काल के समय से 21 दिन तक का दूध।
गाबदा - उथल-पुथलगावा-गान गाना
गाभा - तालाब का गड्ढा भागगालमारा बात करना
गिजढ़ा - हास्य कौत्तुक
गिदर - छोटा शिशु
गिलटि - गोल मांस पिंड़
गुड़िया - मिठा
गुगलि - घंघि
गुटिया - समेटना
गुठरा - छोटा/नाटा
गुता - धक्का मारना
गुमठा - छोटा कद का गठीला शरीर
गुरगुराई - गुस्सा करके चल पड़ना
गुलल - गुलता
गेंड़ा - ग्रन्थि युक्र मुल
गेरेगेसे - जमजमाट
गेंधि - गरम काल में कम जल में मछली का रोग विशेष
गेरेमेते - किसी काम को करने के लिए मजबुर करना।

गतिआ - एक गोत्र का।

लगेलाय - अधिक मात्रा में सीझ जाना

गाहजन - परब विशेष (चैत पर्व)

गिरहा - ग्रन्थि

गुँदुरगुसा - अन्तर्मुखी आदमी

गुष्ठि - एक ही वंश का

गियान - ज्ञान

गुनी - झाड़फूक में पारंगत आदमी

"घ"

घड़ना - झाड़ी से किसी क्षेत्र का घेरना

घँसड़ा - घसीटना

घाघरा - एक प्रकार का दाल

घिस्टा - गंदा

घंग - पत्ते का बनाया हुआ खोल जो वर्षा के दिन में बरसाती का काम आता है।

घुघि - बाँस की तीली या काशी घास से बनाया हुआ एक थैला विशेष जो मछली रखने के काम आता है।

घाड़ - गर्दन

घूईना - केवट

घुघिमान - घुघि आड़ने का जगह

घड़ि - अल्प समय/क्षण भर

घाँटा - पसारना

घानि - तेली जाति का तेल निकालने का एक विशेष यंत्र

घाघु - चालाक

घिमा - साग विशेष

घुसुर - कबूतर का विशेष जाति।

घनअ - अधिक मात्रा में

घुरघुइरा - एक प्रकार का कीड़ा

घोर - अधिकता

घाम - पसीना

घार - गृह

घाषाँड़ - घास से युक्त स्थान

"च"

चका - छिलका

चखह - तेज धार

चघा - पेड़ पर चढ़ना

चेंगा - दो डालियों का मिलन स्थल

चँचरा - पक्षियों का पेट

चटा - बार करना

चड़का - सफेद

चदु - निर्वोध

चंदेल - विराट लोक

चपसा - रसहीन

च्भरा	- पानी में भिंगोना
चरावाती	- करदीपिका (टार्च)
चाकमादल	- सष्टपुष्ट
चाटू	- कलछुल
चाँदला	- गंजा
चापका	- पशु के खुर में विशेष रोग
चामवादुड़	- चमगादड़
चार	- मछली पकड़ने का मसाला
चिटा	- गोंद/लाय
चिमड़	- कठोर
चिंहिका	- चमक उठना
चुका	- मिट्टी का भाँड़
चुकि	- घुटना को जोड़ स्थल
चुगुल	- परनिन्दा
चुगि	- छोटा कीप
चुँटि	- बिड़ि
चुटिया	- छोटा चुहा
चेंका	- खट्टा
चुहुक	- टनटन
चेंगा	- दोनो पैड़ के बीच का भाग
चेठा	- चेतना / तन्दुरूस्ती
चेंथड़ा	- गन्दा फाटा कपड़ा
चेपा-चेपि	- खेदा-खेदि
चालि	- बरामदा
चिउड़ा	- चिवड़ा।

"छ"

छछरा	- लोभी
छतिछना	- नष्ट-भ्रस्ट करने वाला
छनका	- छोंकना
छलका	- उफनकर नीचे गिरना
छातु	- सत्तु
छाला	- छाला पड़ना
छाभा	- मिट्टी का छोटा भाँड़
छामु	- निकट
छिछातुर	- चुने-विचुने
छेंदा	- छिद्र
छिपि	- छिछला कटोरी
छँच	- चूल्हा में मिट्टी को लेप लगाना
छेछरा	- चूरमान
छेंछड़	- निर्लज
छितरा	- तितर-बितर
छोआ पथरा	- गोद में बच्चा खेलाने वाला
छौ नृत्य	- लोक नृत्य विशेष
छिटका	- छींटा पड़ाना
छामड़ा	- विवाह मंडप
छाउनि	- छावनी
छटाक	- ¼ पाव
छँड़ा	- किशोर बालक
छोछा	- धुलना
छोंछतल	- अति निकट
छुरूक	- अल्प
छिंड़ा	- टूटना

"ज"

जबरा - डींग हाँकने वाला
जभी - जल एवं कादो से भरा गड्ढा
जरक - सरस
जलहरी - जलाशय
जावा - करम परब
जाड़ - ठंडा
जालि - कच्चा फल
जिनगानि - जीवन
जुड़िपाड़ि - समवयस्क
जाँता - तेल निकालने का मशीन
जंगटिमाटि - चिटामिट्टी
जोलहा - झारखण्ड का मुस्लिम
जूँठा - अवेशेष खाना
जुमड़ा - अर्द्ध ज्वलन्त लकड़ी
जेनी - स्त्री
जेठी - ताई
जेठा - ताऊ
जुड़ा - ठंडा होना
जुड़ा - बैलगाड़ी जोड़ना (हल जोड़ना)
जक - जोंक,
जहत - झमेला
जनार - भुट्टा

"झ"

झकमारि - तावड़तोड़
झँकरा - खपरैल छत से पानी गिरना
झँट - जल्दीबाजी
झड़ा - लगातार
झाईल - लम्बा
झाईल - जोड़ा (समष्टि), गाड़ी साईल
झमरा - बेहोश
झुड़ - झाड़ी
झुड़ा - निर्मुल करना
झुमा - झपकी लगना, उँघना
झाँक - लता को लकड़ी द्वारा सहारा देना
झिंटा - सींचना
झिंका - गिनती करने में व्यवहार
झुमुर - लोकनृत्य/नाच/संगीत
झलखना - जोंरो की भुख
झानका - दरवाजे पर लगा लकड़ी जो जमीन पर गड़ा हो
झारक - गरमी
झाड़खंड - राज्य का नाम/पार्टी विशेष
झाखारा - पूजा विशेष में बचा प्रसाद
झाँटि - पतला लकड़ी समुह
झनकावात - पशु विशेष का एक रोग
झाँपि - एक प्रकार का टोकरी जिसमें ढक्कन हो

झाँप - कूदना

"ट"

टुँटि - गला

टाँड़ - ऊसर विस्तृत मैदान दालाल

टिकर - समतल ऊँचा स्थान

टेंटुआस - प्यास

टिरा/टुरा - बौना

टिरटिरा - टलमल, झोल मारना

टुकु - अल्पमात्रा

टुँकि - बाँस का बना एक प्रकार का टाकरी

टुंगा - तोड़ना

टुपा - छोटा बाँस का टाकरी

टुएक - अल्प

टुसुक - टपटप

टेका - राकना

टेडहा - वक्र

टेड़हा/टिंड़रा - मरना

टेड़ही - घमंड

टेना - कपड़ा का टुकड़ा

टाँड़गित - एक विशेष प्रकार की लोकगीत

टुसु - धन लक्ष्मी देवी

टुभी - नाम विशेष

टिलहा - दीमक लगा हुआ मिट्टी का उभरा भाग

टुनकी - मुरगी रोग विशेष

टाँगी - कुल्हारी

टाठ - गोशाला का दरवाजा

टाँग - लटकाकर रखना

टेसुफुल - पलास फूल

टेपर - वक्र

टुअर - अनाथ

"ठ"

ठपा - टीका

ठेरका - बैल के गले की घंटी

ठाना - मन में विचार करना

ठसा - भंगुर

ठिठरा - ठिठुरना

ठिन - नदजीक/पास

ठिलि - पीतल का घड़ा

ठेंगा - बाँस की लाठी

ठेर - वज्र

ठेंठी - ताँत का बना साड़ी

ठेंठा - छोटा

ठेरका - लकड़ी का हाथ

ठेसा - ठोकर

ठुनका - धीरे-धीरे रोना

ठमका - रूक-रूक कर

ठार - संथाली भाषा

ठुठना - लकड़ी का एक टुकड़ा

ठुटुमुठु - सिकुड़कर

ठाठर - सिकुड़कर

ठाठर - स्थायी

ठकठकी - आदिम काल का लौह पत्थर जो घर्षण से आग निकला हैं।

ठुँका - गाड़ना

ठाई - जोर से प्रहार करना

ठेप - निरर्थक

ठेसाठसी - ठेलमठेली

ठुलि - लकड़ी का आग/ढ़क्कन

"ड"

डभा - छोटा जलाशय

डरा - भय पाना

डहर - पथ

डाँगा - समतल ऊसर भूमि

डाँठ - कठोर

डाड़ि - गड्ढा खोदकर पानी निकालने का स्थान

डाँग - लाठी

डागर - विशाल

डिवरि - ढ़िवरी

डिंगला - कोंहड़ा

डुँगरि - पठार

डँड़गा - लम्बा

डुभा - बड़ा कटोरा

डेरहा - पकने का पूर्व

डालि - बाँस की टोकरी

डँगुआ - बाँस की टोकरी

डँगुआ - अविवाहित लकड़ी

डालधरा - हस्तांतरित करना

डेनका - पंख

डेलि - बाँस का बना अनाज रखने का पात्र

डेनि - धान काटने के पश्चात लक्ष्मी देवी ठकुराइन को घर लाना

डावका - पानी से तैरने की कला

डाँड़नाच - नृत्य विशेष

डवका - गर्म होकर खोलना

"ढ"

ढोल - बाहूय येत्र

ढाक -

ढंड़र - बड़ा छिद्र

ढनका - इधर-उधर जाना

ढनढन - आश पर घुमना

ढाड़ा - मारना

ढाड़ स्त्री पालतु पशु (बकरी)

ढिपरा - मोटा

ढुआ - विशेष प्रकार का संगीत

ढुसा - सिंग से मारना

ढुसमा - ठाकर खाना

ढेमना - निर्लज

ढेंसना - खोट देना/आराप

ढेंकि - धान कुटने का यंत्र

ढेंकशाल - ढेंड़ साँप विशेष कुड़मी

जाती चरित्र ढंड़ साँप के साथ तुलना करके प्रवाह में ढँड़कहा जाता है। कुड़मि जातिशाति सहज सरल किन्तु रेगेगेले खाड़ेन पेट भर्ती खान मिल जाने से काम करते नाराज निर्जर क्षेत्र छोड़ कर जाना नहीं चाहता।

"त"

तॅई - तुम/आप (कुड़मालि में एक ही शब्द व्यवहार में आता है।)

तहर - तुमहारा

तहेर - तुमलोग का

ताक - उपर नीचे रखना

तड़ - अक बक

ताता/तातल - गरम

ताताबाहि - जल्दी-जल्दी/छने-दने

तारामचा - उच्चस्थल बैठने का स्थान

तितकि - जलन्त काठी

तिखि - हठ मिजाज

तरफसानि - एक तरफा विचार

तलबिच - कमवेशी

तुपा - माठी चापा

तखड़ - फुर्ति

तला - बीज राखना

तिल - शरीर पर काला बिन्दु

तेरिमेरि - हाथा पाही

तेरिआन - बलवान/गरूटा तेरिआन

तेल खईर - शोच पालना या मृत्यु के बाद तीन का क्रिया

तमाल - गाछ विशेष

तकलि - सुता पाक देने का काढी

तेंदड़ - बदमास

तड़पा - हाहुतास

तितकुठ - तीता

तिनई - तरकारी

"थ"

थका - परिश्रानत

थकित - थकावट

थथना - ठोंठ

थडरा - पिछल कर गिरना

थमथम - चुप-चाप

थिथा - आसवन

थसड़ा - गुस्सा में पटकना

थापा - (गॅठे थापा) थापना

थुप-थुप - एकप-एकप

थिरा - स्थिर

थुतड़ा - अतिकाहित

थुलका - मोटा

थथर - निर्लज (ढीठ)

थाना - पुलिस का घर

थासा - साना/मिला

थुपकि - (खेल विशेष) तलन मिलना

"द"

दाँवआँ - बैल को हल में हालो खाड़ि

दा - हँसुआ (अनाज काटने का यंत्र)

दड़रा - घर्षण करना

दुबरा - छिपाना

दापट - प्रभाव

दवड़ा - भोज करना

दमे/दमतक - बेसी

दामागुड़गुड़ा - भुत का नाम

दिकदिकानि - विखत

दुना - पिटना

देदार - बहुत/एन्तम्

दवड़ - ढाई गुणा

दड़ि - हाथ पका राशि

दिरखा - मिहि का दिवार पर समान रखने का स्थान

दनदना - ताड़ाताड़ि/जल्दी

दरद - ममता

दोतन - मुख धोने का काठी

"ध"

धरन - सुखा/वृष्टिहीन

धला - सफेद

धसका - धसजाना

धाधा - बाड़ा बाड़ि करना

धोधाड़ा - ढुँढना/खोजना

धासा - आगुन से दाग

धीरा - भय दिखाना

धुना - अधिक मारना

धजा - डगा/आग

धेना - प्रसव करना

ध - गाछ विशेष

धुलट - धुरा से खेलना

धुरा/धुला - माटि/बालु

धकल - धक्का देना

धमसा - बाह्य यंत्र

धमसा - बाह्य यंत्र

धमका - अटक करना/भय छेखाना

धतुरा - नशीला फल

धुँध - झोप

धुला पड़ा - इस अंचल का मंत्रशक्ति / झाड़ फुँक

धनि - सम्बोधन शब्द

धुका - हावआढेना/धान धुँका

धोंगड़ा - बाँधना पर्व में गानकर धार-धार में जाना

धुमड़ा - मोटासटा

धादकी - फुल विशेष

"न"

निरन - ग्रीष्म काल

नितई - दैनिक
नितिनिति - दिन-दिन
निकाश - विश्वास
निशान - चिन्ह
निदुड़ि - नीतु होकर
नेगुड़ - कंज पुँछ
नांगटि - गाली विशेष
नारता - बच्चा प्रसव का ६ दिन का क्रिया
नामाल - ढाल जगह
नछछार - अकर्मनय
नुनि/नुनु - छोटा बच्चा का सबंधं पद
नेउता - निमंत्रण
नुन - लवण
निस्टा - सत्य
नेहाल - कृतार्थ
नाचनि - बाई/नतेजी
नेगुड़ा - पशु विक्रिका (केट)
नाहुआ - लोकनृत्य इस आँचल का
निउड़ा - भिगे कपड़ा से निचोड़ना
नुड़ा - जल ढालना
नजर - देखना
निबाहुड़ - धुरे
निखरा - बाछना/चुनना

"प"

पइना - छड़ी/लाठी
पदधन - पहनें का कपड़ा
पागार - मिहिका घेरना
पघला - गल जाना
पछड़ा - धान पछड़ा
पड़खा - धुर्त
पत्रुक - विश्वास
पेंइतरा - चालाकी
पलई - मदली धरने का विशेष औजार
पुलका - डरपोक/भीतू
पखरखुला - रात्रि में पशु को चराना
पाखड़ - पत्थर
पखलां - घुलाना
पाखुड़ - पाखी छाना
पागा - काँटा-छाँटा
पाजा - धार तेज कराना
पाकड़ा - धाधु
पारा - लिसन
पालई - खड़ का गाढ़ा
पसरा - भुल जाना
पिठा - चाल गुड़िया निर्मित वस्तु
पिंड - पिण्ड
पिंड़हा - लकड़ी का आसन
पिंद्राड़ - घरबाड़ि का पीछे
पिढका - ढोड़ना
पिया - गाय दुहा
पुँग - आँकुर
पुँगि - पात का चोड़

पुचका - फसका
पुथान - खाटि का ढान देना
पुढका - पाखा उड़ाना
पुवाल - बिचाली
पुरूष - स्वामी
पुहा - छोटा चारागाह
पेछा - कला करना
पान्हा - गाय का दुध स्त्राव का समय
पेंपचि - ताल पत्ता का बाँसुरी
पुनना - प्राचीन
पाटि - बाँध घाट का बड़ा पत्थर
पाँचर - (शक्त करने का लकड़ी टुकड़ा) हालटाई पाँचर हिहिन
पिरान - कुरता
पाँचाटि - विशेष रीति (धान रोपने का शुभारम्भ)
पाकट - शकत
पुरतरी - धर्म पूजा का विशेष प्रसाद हलुदमाखा टोहम का

"फ"

फड़का - अंड़ा से बच्चा
फादा - खाली स्थान
फानड़ - फेंकना
फदर फंड - सम्पूण खोला
फाँचट - नष्ट
फड़ा - फाजिल
फारकती - विहित व्यवस्था
फिचि - छोटा
फुकरल - चुल्हा फुँकने का बाँस का नली
फुचफाच - एदिक-उदिक
फुसला - भुना
फेटान - वकना बाछुर
फेड़ - पेड़ का मुल
फोंकरा - कॉपा
फोंड़ - विपद
फाल - लोहा का विशेष यन्त्र हल के लिए
फजर - विहान
फरिछ - परिस्कार
फालना - अमुक
फरह - फायदा/लाभ
फुनगि - आग का कण
फेंड़की - आगुड़/टाट

"ब"

बक - बोटा
बाऊँड़ी - एक विशेष प्रकार का पर्व
बईरि - वि:शत्रु
बाजड़ा - धक्का
बेटिन - बेटी
बतर - सुविधा
बधा - चुपकरा

बयार	- काड़ा- माताल कड़ा	बेघा	- जारज सन्तान
बलका	- फुटन्त	बेलग	- पृथक करना
बड़रोग	- कुष्ट	बेसाती	- तरकारी
		बेसार	- सरसा
बन्देज	- श्रृंखला	बोंगा	- आदिम देवता
बाँउड़ा	- भुल जाना	बेसाम	- प्रातः समय
बाउला	- मतिभ्रम	बना	- तेरीकरा
बाखान	- गाली देना	बेना	- घास जातीय अशोच के समय देना मुल में जल दान।
बाघुत	- कुदरा देवता		
बाँझा	- सन्तान हीन		
बाँटा	- पीसा	बाईद	- वाईद धान
बाड़हन	- झाँटा	बाइसाम	- दस बाजे का खाना
बालसा	- पित्तरोग	बाथान	- गते में माढि देना
बासा	- गन्ध	बेजारा	- शरीर असंतुलन
विकल	- व्याकुल	कबजुरी	- विड़ड़ल
बिखला	- धोया	बिहिन	- बीज
बिद्दाप	- फुटानी	बुना	- बपन करना
बिन्न	- छिन्न भिन्न		"भ"
बिद	- सरू छिद्र	भईड़	- गोड़ाली
बिथान	- चरदिक छड़ानो	भकभँड़	- बेक्कुप
बुच	- गाछ विशेष	भुख	- खिदा
बुगि	- फाँकि देना	भगा	- कपड़ा पहना आदि काल
बुचा	- टुटा	भगता	- चड़क पूजा व्रती
बुटि	- आग रखने का वस्तु	भथड़	- धार निहि
बुला	- घुमना	भसका	- टुट जाना
बेट	- विन पथवार खदुनी	मॉउरी	- ग्रामे-ग्रामे फेरी करना
बेताक	- गोल माल	भाका	- धुम धीरे चमक

भाया – धान सिद्ध करना
भड़ति – धान/चाल विकाकिना
भावश – बेसन तेरी तेल भाजा
भाला – देखना
भिड़का – भय से भागना
भिनसरा – भोर
भुरका – छिद्र
भुलभुड़ि – घर दिवाल पर छिद्र
भुँस कुड़ा – आलस
भेंखु – बोंटा
भेवी – भान करा
भेली – बीज लगाने का लाईन
भेलकी – भेंगचा
भेंसा – व्यंग करना
भेला – काम पुरा
भगुआ – काछा
भेक – केवला
भेवा – चित कार
भातार – स्वामी
भेंसुर – स्वामी का बड़ा भाई
भुसि – अनाज का ऊपरी अंशु
भने – रचना
भरभरी – धान जातीय
भेगराज – औषधी गाछ
भजना – मिश्रित करना
भरता – पूड़िये चोखा

"म"

मगरा – मिट्टी का पाईप
मचका – शरीर का अंश हट जाना
मड़कचा – घर का छादन का केन्द्र
मागना – उधार लेना
मचुली – दड़ी का तेरी बेचने वाला विशेष
मुड़ा – अन्तिम/कुल्हीर मुड़ा
मिन्तुक – किन्तु
मेहना – अफसोस
मिछा – मिथया
महक – गन्ध
मादल – वाद्य विशेष
मादा – स्त्री
मशान – शवदाह स्थल
मागुर – मछली विशेष
माहुर – ज्ञानी व्यक्ति
मायरी – शपथ/किरया
मुलुक – झाड़खण्ड मुलुक
मुनिस – मजदूर
मिआँ – बेटी गिदर के सम्बोधपद
मुहाँ – उपस्थित करना
मिता – फूल/बन्धु

"र"

रका – टाटका
रकत – रक्त / खुन
रगड़ा – रगड़ा / घर्षण
रचरचा – मचमच

रठ - गड़िमसि
रडा -
रसा -
रहम - रक्षा
रागे-रागे - ताड़ा ताड़ी
राड़ि - विधवा
रिझ - आनंद
रूगड़ि - मिहि का प्रकार
रूना - सुखना
रूपु - टिया पक्षी
राता - अनाज का बीमारी
रला - घर का विशेष लकड़ी
रूसा - (अभियान) कुड़मी जाती का विवाह के समय विशेष रीति जामाई अभिनान करें दानी पूरन करना पड़ता हैं।
रहिन - (रोहिनी नक्षत्र) 13 जेष्ठ बीजवपन का शुरआत (झारखंड में)
रिचिका - कम परिभाण
रैदा - बढ़ई का यंत्र विशेष

"ल"

लछना - छलना
लटुखंडा - उभय पक्षी
लड़वड़ा - कमजोर
लदका - झुला
लेगे/लागि - केकर लागी
ललका - लोभ देखा
लवज - रसिक
लहरा - कौतुक
लारि - असमर्थ
लाभेक - योग्य
लिपा - लेपन करना
लियोई - झगड़ा
लिघा - बैलगाड़ी का एक्सेल
लुगा - साड़ी
लुका - छिपजाना लगन विवाह में विशेष रीति
लाठ - कुएँ से पानी निकालने के विशेष यंत्र

"स"

सड़क - रास्ता
सतर - शतर्क
सराक - जैनधर्मालम्बी सम्प्रदाय विशेष
सुडर - एकताल
सनला - मुनगा पेड़सफरा - लंका/मिर्च
साँता - ज्वालतन करना
सापटा - समस्त
सिझा - सिकरा
सिपत - लक्ष
सिराँई - शेष

सुगुम	- चुप करना
सोयाँग	- सामर्थ
सुआद	- स्वाद
सुसका	- धीरे-धीरे रोना
सँखड़ी	- जुठा
सईर	- समतल
सुप	- कुला
सुरका	- हिचकी
सेखि	- तेजी
सेरहा	- एक पौआ
सबधानि	- हल का खिलिन
सुटका	- मेचेली रोग
सजनी	- सखी
सरा	- फरक हवआ
सहा	- साकृयकरा
साँकट	- कम जगह
सामलाहा	- आचत्व करना
सँथा	- स्वामी
साँडार	- झोड़ा बँधा
सकइेल	- झोड़ा बँधा
साना	- मिलाना
सारई	- शाल
संगा	- एक साथ
सुता	- सुता/निद्रा
संथल	- भिजा जगह
साँझ	- विकाल
सलि	- दस सेट

"ह"

हदका	- आग का जलना
हक	- अधिकार
हापा	- छोटा तालाब
हड़बड़	- जल्दीबाजी करना
हेंचका	- खिंचना
हदहदाई	- अत्यधिक वेग
हदवहा	- बाचाल
हलुमुड़ा	- विकट चेहरा
हलफेल	- विस्तृत जगह
हाईटाटका	- निराश
हादसा	- विषन्नभाव
हावड़ा	- शेष पर्याय
हाँसा	- सफेद
हाँसुआ	- हँसुआ
हिवड़ा	- नजदीक
हिला	- डोलना
हिसका	- अभ्यास
हेंसरा	- हाँफनी
हँकरा	- गर्जन करना
हुचुक	- उत्तेजित
हुजरा	- मोकाबिला
हुड़का	- लकड़ी का अर्गल
हुड़कुचा	- जोर से ठेलना
हड़मुठ	- विवेकहीन
हाँड़हा	- बड़ा घड़ा
हाँड़का	- बाँस का बक्सा

हेंट गड़ान - ऊँच नीच स्थान
हुँड़ार - विशेष जानवर
हरगिज - कभी नहीं
हेंटा - गिराना
हेजाक वाति - गैसबत्ती
हेंटमुड़ा - सिर नीचे
हेलक - देऊ (हितोर)
हेंसफेंस - जोर से हाँफना
होईड़ - थोक करना
हड़ - बेपरवा
हेलसा/हालसा - भय दिखाना

कुड़माली के उल्टा शब्द

" क "

कालुहा - उरूम
कड़कठ - सुरूखुरू
किना - बिका
कसनो - अवगास
कसे - दुचेक
कसुर - बेकसुर

" ख "

खरह - मालह
खाँडा - गटा
थक - एकेड़ा
खिल - चसत
खिदड़ - परघ
खँट - दाँगा
खेलाय - भुला

" ग "

गुड़िया - तिता
तेजी - गदा
गाहुल - निझुम
गाजाड़ - टिकर
गोला - मुनिष
गिला - डाँट

" घ "

घुड़ा - उधरा
घटा - उभरा
घुराट - सझु
घिसटा - परछ
घलटा - दौड़ा
घाघु - बका

" च "

चडिट - गड़ान
चिनहाप - चिचिनहाप
चखअ - मथड़
चढ़हा - नामहा
चज - हेला
चहुल - निचाल

चड़का - काबरा
चिंमड़ - ठसा
चलन - अचलन
चाँड़े - विलम
छाँटा - निछाँटा
छंड़ा - बुड़हा
छितर - समटा
छुला - निछुला

" ज "

जड़ - विजड़
जल - थल
जात - वेजात
जिगिड़ - सुरूखुरू
जुइत - बेजुइत
जितकार - पाहुड़
जरप - हेंदरा

" झ "

झाइल - ठुरका
झईड़ - धरण
झँटअ - पलम

" ट "

टुअर - माहुर
टेढ़ा - सझा
टान - झोल
टिकर - घास

" ठ "

ठसा - चिमड़
ठिन - बेटिक
ठनका - सँथल
ठउका - साँगि
ठाँऊ - फरक

" ड "

डाँट - लुरूपुतु
डाँसा - काच
डागर - छुटु
डहर - बेडहर
डिगर - सरम
ढ़ेला - चुर
तागड़ा - लिडिबिड़ि
तातल - बासि
ताहुल - बेजार
थाना - नुमा
थेरपो - अथाही
थेरपो - ऊँचा
थल - जल
थिराई - जल्दी
थुभड़ा - बिहाइला
थसह - मसड़
थुकुम - चालु
दडह - लिड़बिड़
दया - निठुर
दाँवआ - आवट
दलदल - ठन-ठन
दगला - सचा

दसर	- पाहिल	फरकझंग	- खुलहा
दसान	- तेल मापने का इकाई	बाइग	- बेबाड़ग
दाईन	- आपन समय/बड बदुक ढाईना घारे घारे	बिका	- किना
		बिलात	- हावलात
दुलार	- आदर/स्नेह	बाँड़चु	- झापर
द	- जलाशय / कूद	बतर	- बेबतर
छरपड़ा	- कमजोर	बसाम बेला	- आड़बेल
दुलका	- कम्पन्न	बका	- सियान
दाईना	- कंजुस	भाला	- नुभा
धूप	- छाँहा	भरम	- बेभरम
धवति	- उआस	भाभना	- निभाभना
धार	- उधार	भस्का	- गुछाअ
धरण	- झईड	भरा	- खाली
नाफा	- घटा	भिनु	- संग
निरा	- फरा	भितर	- बाहिर
नेइहर	- ससुराल	मिछा	- निष्टा
पुरह	- मेहि	मुलुक	- परदेश
पिंदाड़	- आँगीना	मकत	- किमत
पूँति	- निपूँजि	मान	- बेमान
पसन्द	- निपसंद	माहुर	- टुअर
पूचका	- सूजुड़ा	मालुम	- निमालुम
पाकतो	- केचिंड़ा	अकबक	- व्याकुल
पाकल	- काँचा	अगड़-बगड़	- उलट पलट
फेइल	- साँकट	अछा	- मुर्ख
फाराक	- लजिक	अट	- समाप्त करना/ठेका देना
फरा	- निरा	अधाई	- परितृप्त खना
फजर	- साँझ	अड़	- शुरू/आरम्भ

अड़कंक - निर्बोध/वोकाटे
अहड़े-बहड़े - रास्ता छोड़कर
अदा - भींगा
अलहड़ - बुद्धिहीन
अपसट - असुविधा
असठा - सहन नहीं करना
असार - चौड़ा
आड़वेला - विकान वेला/संध्यावेला
आँढर - एक गुँआ
आड़ा - पता/घुघियाड़ा
आड़हा - काम करने बोलना
आँतर - हल जोतनें की विधि
आदाँर - दाँत निकलने का पूर्व अवस्था
अधन - भात उबलाने का पानी
आनखाई - अनर्थक
आबगा - खांटी
आवट - अनभिज्ञ
आंगरा - जलत आग का टुकड़ा
आईरसा - चावल गुंड़ी का पीठा विशेष
आहठा - धमकी देना
आलोनी - गोरू गाड़ि का खिलान
आँढ़रा - कांड ज्ञाहीन
आड़कानि - न समझने का भाग
आजिसाअ - सास की सास
आजाबाप - बापके बाप
आटकाल - अनुमान

आगुड़ - दरवाजा
आजड़ा - खाली करना
आँचका - अचानक
आखरा - नृत्यस्थल
इरा-इरि - रेसा-रेसी
इदिन - आजकाल
इसारा - संकेत
इजई-पिंजई - कालीपूजा की विशेष प्रकार की बत्ती
इँचरा - बाछना
इँड़का - दौड़ना
इँचली - मछली विशेष
इँचा काना - ताल काना
उकान - तालाब का जल प्रणली
उखड़ा - जड़ से उखड़ जाना
उगरा - उलटी करना
उचरा - शुरू करना
उदमा - फालतु
उजाई - सीधा
डझुल-पुझुल - आलु-थालु
उभका - बच्चों का तैरना
उला - गुरू बाड़ि चक्का बेयरिंग
उझला - डालना
उल्फा - फांदना
उसट - बंजर
उसुर-पुसुर - उस-खुस करना
उसता - छटपटाना

कुड़माली वस्तु निष्ट प्रश्न

1. पाँच परगनिया झुमर कर जनक कन रहे ?
   (a) बिननद सिंह (b) दीना खेपा
   (c) दीन गौंरी (d) सदाइ
2. जोति प्रसादकर राज सभाकवि कन रहे ?
   (a) भवप्रितानन्द ओझा (b) गौरांगिया
   (c) दुर्योधन (d) खेपा
3. भवप्रीतानन्द ओझा कर लिखल झुमुर ग्रन्थ कर नाम किना ?
   (a) वृहत झुमर रसमन्जरी (b) फुरूंग
   (c) टेंसफुल (d) झुमुर समीक्षा
4. कौन लोक कवि निरक्षर रहे ?
   (a) बिननद सिंह (b) दीना ताँती
   (c) बसन्त कुमार मेहता (d) जगदीश चाँद
5. मानभुमेक धँघौरा काकर लिखल ?
   (a) सृसटिधर सिंह देव काटिआर (b) दीना ताँती
   (c) दीजा टीमा (d) अरूण घोष
6. बेंगल बोले तुँइ छटअ/बिहार बले दुर हटो-झुमरटि काकर लिखल ?
   (a) अनिल महतो (b) सुनील महतो
   (c) कालीपद महतो (d) वसन्त कुमार महतो
7. बाघमुनडि एलाकार पुराना झुमरकार कने लागत ?
   (a) उदय सिंह (b) दीना ताँती
   (c) गौरांग सिंह (d) दुर्योधन
8. 'मानभुम केइसन सुन्दर' झुमरटा रचना कन ?
   (a) सुनील महतो (b) कालीपद महतो
   (c) भजअहरि महतो (d) मोहन महतो

9. कुड़मालि आनार बानार पत्रिका सम्पादक कने ?

(a) सुनील माहात (b) निर्मल महतो

(c) मजअहरि महतो (d) हरिपद महतो

10. सइतअकिंकर दत्तअकमुर्ति स्थापना कने करल रहत ?

(a) विधायक नेपाल महतो (b) भुपाल महतो

(c) कालीपद महतो (d) सुनील महतो

11. करम धरम काकर परब ?

(a) आदिवासी (b) बिहारी

(c) बांगाली (d) काकरअ निहि

12. जनजाती क्षेत्रीय भाषा विमाग का अध्यक्ष कने ?

(a) राम दयाल मुन्डा (b) कृष्ण चन्द्र टुडू

(c) विनय वरय नाग (d) डा० विसेश्वर प्रासद केशरी

13. करम दीप पत्रिकाक सम्पादक कन ?

(a) भजअहरि महतो (b) नित्यानन्द महतो

(c) सुनील महतो (d) सलावत महतो

14. मरांग बुरू – कविताटा काकर लिखल लागेक ?

(a) अनन्त केसरिआर (b) आनन्द खुँटदार

(c) सुनील माहतअ (d) किरिटि माहातअ

15. सारहुल पत्रिकाकर सम्पादक कने लागे ?

(a) सुनील महतो (b) किरिटि महतो

(c) मोहन महतो (d) निर्मल महतो

16. झारखडेक यीशु कन लागे ?

(a) शहीद निर्मल महतो (b) आनन्द महतो

(c) भजअहरि महतो (d) शशिभुषन महतो

17. 1982 साले झाड़खण्ड मुक्ति मोर्चाकर सिहम महाविवेशने कने केन्द्रीय कमिटि सदस्य रहे ?

(a) निर्मल महतो (b) मजअहरि महतो

(c) गोपाल महतो (d) नेपाल महतो

18. कौन साले सिधु कानहु विद्रोह घोषना हेल रहेक ?

(a) 1765 (b) 1855–56

(c) 1807 (d) कनअ निहि

19. 'शिलालिपि' पत्रिकाक साम्पादक कने ?

(a) वंकिम महतो (b) सीताराम महतो

(c) मजअहरि महतो (d) हरिपद महतो

20. बिरसा मुण्डा कर जन्म कौन साले ?

(a) 1675 (b) 1677

(c) 1678 (d) 1875. 15 नमेम्बर

21. धरती आवा काके कहल जाइक ?

(a) बिरसा मुण्डा (b) दीना ताँती

(c) रामकृष्ण गांगुली (d) भबप्रीतानन्द ओझा

22. उलगुलान कथाक अर्थ किना ?

(a) आन्दोलन (b) सार्बिक विप्लव

(c) जिन्दावाद (d) सत्याग्रह

23. मानभुम जिला छात्र सम्मेलन कबे हेल रहेक ?

(a) 1940 (b) 1936

(c) 1939 (d) 1842

24. "अभिनव विधापति" काके कहथिक ?

(a) रामकृष्ण (b) भवप्रीतानन्द ओझा

(c) वाउल दास (d) केउ निहि

25. मानभुम कर प्रथम कॉलेज कौंहा हेल रहेक ?

(a) झरिया (b) धनबाद

(c) पुरूलिया (d) काहु नि

26. करमतीर्थ पत्रिकाक सम्पादक कने लागे ?

(a) आनन्द महतो (b) निताई चन्द्र महतो

(c) लक्ष्मीकान्त महतो
(d) निर्मल महतो

27. स्वाधीनता संग्रामी कन लागे :-
(a) गिरीश चन्द्र माहातअ
(b) निताई महतो
(c) राधागोबिन्द सिंह
(d) देबेन्द्र महतो

28. रक्ते राँगा मानभुम काकर लिखल लागेक ?
(a) सीताराम महतो
(b) भजअहरि महतो
(c) अशोक महतो
(d) गोपाल महतो

29. 'महुआ फुलेक गन्ध' काकर लिखल ?
(a) राधानाथ महतो
(b) खेमानन्द
(c) द्विज नरोत्तमा
(d) हाजारी प्रसाद राजवाड़

30. छो-नाच कर पद्मश्री पुरस्कार कने पावलाहात ?
(a) नेपाल महतो
(b) मानिकलाल माझी
(c) अनिल महतो
(d) गम्भीर सिंह मुण्डा

31. टुसु गाने मानभुम आपपतिकर निशेध कने करल रहे ?
(a) रामकृष्ण
(b) जयराम
(c) बिनन्द सिंह
(d) के. बी. सहाय

32. झुमर कर पीठस्थान कान जायगा ?
(a) पातकुम
(b) अयोध्या
(c) बाघमुण्डी
(d) काँहु निहि

32. पीरिति काँठालेर आठा-झुमर काकार लिखल ?
(a) दीना ताँती
(b) रामेश्वर
(c) बिनन्दिया
(d) द्विज टीमा

33. लालन पुरस्कार कौन झुमर शिल्पी पाउलाहात ?
(a) झगड़ु महतो
(b) हीरू महतो
(c) सलाबत महतो
(d) हरि महतो

34. छोटअ नागपुर कर बुलु-बुल काके कहथिक ?
(a) तृप्ति विश्वास
(b) बेनु देवी

(c) रेनु देवी

(d) सिन्धु वाला देवी

35. सुधी प्रधान पुरस्कार कने पाउलाहात ?

(a) हरिपद महतो

(b) तारापद महतो

(c) शशधर

(d) गुनधर सहिस

36. छौ तरंग विस्मय कर बालक कने लागे ?

(a) सुबोध महतो

(b) अविनाश महतो

(c) कमल महतो

(d) फकीर महतो

37. भालअ बासार कथा नाई, कथा आछे शुधु झुमरटि काकर लिखल ?

(a) नीलमनि देवी

(b) गीता देवी

(c) सुशीला देवी

(d) चपला देवी

38. गाजन मेला मेला काँहा लागेक ?

(a) पाकविड़रा

(b) चाकलतोड़

(c) बराबाजार

(d) चिड़का

39. भादु गान कर ईटि कथा काकर लिखल ?

(a) अविनाश महतो

(b) उमा माहातअ

(c) युधिष्ठिर

(d) फनि महतो

40. इँद परब काँहा लागेग ?

(a) बराबाजार

(b) आयोध्या

(c) नोयागड़

(d) बागमुण्डी

41. पातकुम कर राज्य सभाकवि कने लागेक ?

(a) रामकृष्ण गोस्वामी

(b) अरूण घोष

(c) कृत्तिवास महतो

(d) मधु महतो

42. टुसु परबे कन देवीक पुजा करत ?

(a) धन लक्ष्मी

(b) जन लक्ष्मी

(c) लक्खी पुजा

(d) सरस्वती पुजा

43. आखाइन जातरा कन दिन लागेक ?

(a) पहिला माघ

(b) पुस संक्रान्ति

(c) मकर संक्रान्ति (d) कनह निहि

44. " गराम पुजा" किना लागेक ?

(a) कुदरा (b) अहिरा

(c) मनसा (d) जाहिर बुड़हि

45. रक्ते राँगा मानभुम काकर लिखल लागेक ?

(a) सीताराम महतो (b) भजअहरि महतो

(c) अशोक महतो (d) गोपाल महतो

86. रोहिन सँसकिरिति कखन हेइक।

(a) बइसाख सांकराइते (b) जेठेक सात दिन

(c) आषाडेक दस दिन (d) जेठेक तेरअ दिने

47. बाँधना परबेक गीत किना लागेक ?

(a) गाजन (b) टुआ

(c) सँहरइ (d) अहीरा

48. करम परब कने करेई ?

(a) माई बेटाक मंगल कामना (b) बहिन भायेक मंगल कामना

(c) बेटीक बापके मंगल कामना (d) भायेक बहिन कर विदाई

49. निरमल माहातअ कर जनम कबे हेल रहेक ?

(a) 25.12.1950 (b) 31.01.1951

(c) 27.12.1951 (d) 28.12.1952

50. निरमल माहातअ बापके नाम किना ?

(a) कारतिक माहातअ (b) रहिना महतो

(c) जनवन्धु महतो (d) अघनु महतो

51. निरमल माहातअ मायेक नाम किना ?

(a) पिरिआ देवी (b) सुनीता देवी

(c) बुधनी देवी (d) सुगी देवी

52. निरमल माहातअ कन साले हाइआर सेकन्डरी पाश करेई ?

(a) 1964 (b) 1968

(c) **1966** (d) **1970**

53. कन साले निरमल माहातअ के साड़खण्ड मुकति मोरचाक सिंहभुम जेलाक सममेलन सभापति करा गेलरहेक ?

(a) **11.02.1981** (b) **25.03.1982**

(c) **22.08.1981** (d) **18.07.1981**

54. दोमहनीक जंगल बाचाउएक हाँतिर आनदोलन कबे हेल रहेक ?

(a) **1967** (b) **1968**

(c) **1979** (d) **1986**

55. झाड़खनडेक यीशु किताबटा काकर लिखल लागेक ?

(a) मवप्रीता (b) सुनील माहातअ

(c) अनील माहातअ (d) गुनधर माहातअ

56. 'ना धरे आँखि जल आँखि पाते' किताबटा काकर लिखल लागेक ?

(a) रामकृष्ण (b) गौरांगिया

(c) चक्रवती देवकी नन्दन प्रसाद (d) वाउल दास

57. "जनजाति परिचिति" पथिटा काकर लिखल लागेक ?

(a) गिरीश माहातअ (b) लक्ष्मीकान्त मुतरूआर

(c) सुनील माहातअ (d) भवप्रीता

58. 'कुड़माली साड़ा आड़ाग' शब्दकोष काकर लिखल लागेक ?

(a) वसन्त कुमार मेहता (b) लक्ष्मीकान्त मुतरूआर

(c) गौरांगिया (d) सुनील माहातअ

59. पथें चलाक लेहा नमसकार काकर लिखल ?

(a) शशिभुषण माहातअ (b) नन्दकुमार

(c) किशोरी प्रसाद माहातअ (d) सृष्टिधर

60. कुड़माली केहनी काकर लिखल ?

(a) अनन्त केसरिआर (b) अंगद माहातअ

(c) सुनील माहातअ (d) वसन्त कुमार मेहता

61. केरिआ बहु नाटक काकर लिखल लागेक ?

(a) भजअहरि महतो
(b) कालीपद महतो
(c) अनिल महतो
(d) रामेश्वर महतो

62. सपन आपन पथि काकर लिखल लागेक ?
(a) कालीपद महतो
(b) अनन्त केसरिआर
(c) श्रीकान्त महतो
(d) रामेश्वर

63. कुड़माली चारि काकर लिखल लागेक ?
(a) खुदिराम माहातअ
(b) कालिपद माहातअ
(c) वसन्त कुमार मेहता
(d) श्रीपद माहातअ

64. कुड़माली निबंन्ध काकर लिखल लागेक ?
(a) कालिपद माहातअ
(b) एच.एन.सिंह
(c) हरिपद माहातअ
(d) निरंजन माहातअ

65. 'कविता जुड़ति' काकर रचना ?
(a) सृष्टिधर सिंह देव काटिआर
(b) अंगद माहातअ
(c) सहदेव माहातअ
(d) लक्ष्मीकान्त मुतरूआर

66. वेदकड़ि विहा केसन विहा ?
(a) केनिआर वर घार जाइ
(b) बर केनिआइ घार जाइ
(c) बर केनिआई दुइअ मनदिर जात
(d) बर केनिआइ पाराइजात

67. गोबर बेड़हा घारे कबे देथिक ?
(a) रहिने
(b) करमे
(c) जितियाँइ
(d) सोहरये

68. डाबना कतना दिने देआल जाइक ?
(a) सिहम दिने
(b) माचारअ
(c) नउआरअ दिने
(d) कुड़ि अना दिने

69. ठुकनि विहा केसन विहा ?
(a) लड़की आपने लड़का घार जाइ ।
(b) लड़का आपने लड़की घार जाइ ।
(c) लडका लड़की दुइअ राजि हेत ।

(d) किछु निहि

70. तीता भात कखन देअल जाइक ?

(a) विहाँइ
(b) घरमपुजाइ
(c) सुरज पुजाइ
(d) मरिइ (मृत्यु)

71. छाता डारि काँहा देथिक ?

(a) घारे
(b) बाड़ीइ
(c) कुँआइ
(d) खेते

72. जिलहुड़ परब कखन मानाअल जाइक ?

(a) माञसोरमास साँकराइत
(b) टाअनमास साँकराइत
(c) सहरइमास साँकराइत
(d) जाड़मास साँकराइत

73. दाँसाइ परबे गड़ लागि कखन हेइक ?

(a) विहाने
(b) दुपहरे
(c) साँइझे
(d) राइते

74. जन जातीय क्षेत्रीय भाषा विभागे कुड़माली प्रफेसर कन रहत ?

(a) शशिभुषण माहातअ
(b) एच. एन. सिंह
(c) कालिपद माहातअ
(d) वसन्त कुमार मेहता

75. "कृष्ण लीला" कविताटा काकर लिखल ?

(a) गौरांगिया
(b) भवप्रीतानन्द ओझा
(c) वसन्त कुमार मेहता
(d) नन्द किशोर माहातअ

76. "राधाक पीड़ा" कविताटा काकर लिखल ?

(a) विनन्ददिया
(b) सृष्टिधर
(c) भवप्रीतानन्द ओझा
(d) द्विज टिमा

77. 'पांडव वनवास' कविताटा काकर लिखल ?

(a) विनन्ददिया
(b) बुधु महतो
(c) सुनील महतो
(d) अनिल

78. 'गोचारण' कविता काकर लिखल ?

(a) सृष्टिधर
(b) सरटुआ

(c) रामेश्वर
(d) विनोंदिया

79. 'नर जनम विधि काहे देल' कविताटा काकर लिखल ?

(a) वसन्त कुमार मेहता
(b) शशिभुषन माहातअ
(c) रामकृष्ण
(d) ब्रजुराम माहातअ

80. ''जागरण'' कविताटा काकर लिखल ?

(a) सरटुआ
(b) राधागोविन्द सिंह
(c) सुष्टिधर
(d) दुर्योधन

81. 'अर्येय भगुआत्र खाय धोतिआत्र' कविताटा काकर लिखल ?

(a) लक्खीकान्त महतो
(b) एभवप्रीतानन्द ओझा
(c) नन्दकिशोर महतो
(d) रामकृष्ण

82. ''जगमहनि'' कविताटा काकर लिखल ?

(a) भजअहरि माहातअ
(b) विनन्ददिया
(c) गौरांगिया
(d) अनन्द माहातअ

83. ''पाथर देवता'' कविताटा काकर लिखल ?

(a) भगवान दास महतो
(b) अनन्त माहातअ
(c) सुनील माहातअ
(d) कालिपद महतो

84. ''रदन'' कविताटा काकर लिखल ?

(a) खुदिराम महतो
(b) दुर्योधन
(c) अनिल माहातअ
(d) अनन्त माहातअ

85. सपन आपन किताबे कइटा कविता आहेक ?

(a) माचारअ
(b) कुड़ि
(c) कुड़ चारा
(d) कुड़ टेना

86. परेसनाथ पाहाड़कर प्राचीन नाम किना ?

(a) धवल गिरी
(b) समेत गिरि
(c) हिमगिरि
(d) विनधअगिरि

87. पढ़ो आर लढ़ो काकर नारा लागेक ?

(a) निर्मल महतो
(b) कमल महतो

(c) विनोद बिहारी महतो (d) अनिल महतो

88. करम परब काहे करत ?

(a) भाई बाप कर मंगल कामना (b) बहिन कर विदाइ

(c) भाइ बहिनकर मंगल कामना (d) बहिन भाई कर मंगल कामना

89. जितिया परब काहे करत ?

(a) भाई बहिन कर बिदाई (b) माइ बेटाक मंगल कामना

(c) माइ बहिन कर मंगल कामना (d) माइ बापकर मंगल कामना

90. पदअ पुराणे काकर केहनि आहेक ?

(a) मा दुरगा (b) मा कालि

(c) मा मनसा (d) मा सरअसति

91. राँची विश्वविद्यालयेक स्थापना कबे हेल रहेक ?

(a) **1956** (b) **1955**

(c) **1960** (d) **1961**

92. झाड़खनडेक पितामह कन लागे ?

(a) निरमल माहातअ (b) सुनील माहातअ

(c) बसन्त कुमार मेहता (d) विनोद बिहारी माहातअ

93. जनजातीय क्षेत्रीय भाषा पहिला विभागेक अध्यक्ष कन रहत ?

(a) शशि भुषण माहातअ (b) एच. एन सिंह

(c) डा० रामदयाल मुनडा (d) सुनील माहातअ

94. जनजातीय क्षेत्रीय भाषा विभाग कबे स्थापना हेल रहेक ?

(a) **1980** (b) **1981**

(c) **1982** (d) **1983**

95. कर्ता कारक कनटा हेकेइक ?

(a) कोकिलेर खरे (b) हे विपते राखअ मोरे

(c) लाज कि छुइले जाच चले (d) नागरे बाजाये बाँसी

96. करमअ कारक कनटा हेकेइक ?

(a) जलदेर डाके (b) हामे ससुर सिनाब

(c) खोजबो नायके (d) काँखेते गागरि

97. करन कारक कनटा हेकेइक ?

(a) चाँदेक मंडले बिष बरसिलो (b) वाणे मार देलि

(c) जलदेर डाके (d) सावनेर पवनेर सने

98. समप्रदान कारक कनटा हेकेइक ?

(a) हेरि पीन पयोधरे (b) से बांका ठाकुरे आने दाव

(c) जल आनिते (d) मनमत फल दले।

99. अपादान कारक कनटा हेकेइक ?

(a) बरसाते बरसिलौ (b) गाछ ले पाता गिरलेक

(c) की गुण सुनाते (d) बुझिले ना बुझा जाय

100. संबध कारक कनटा हेकेइक ?

(a) वीर ना कोइ चराते (b) प्रेरेमेते मजिल मन

(c) साधेर तरी (d) मदने दहिते निशि दिन

101. अधिकरण कारक कनटा हेकेइक ?

(a) गेलेन जनक पुरेते (b) ग्रीमते रबिक तेज

(c) धनुषवाण जुड़िते (d) समाज समाज में

अलंकार बाछा

102. कन अलंकार लागेक ?

करिलअ बाँशेकरि रे डालिया
डालिया नये नये जायरे।

(a) वृत्तानुप्रास (b) छेकानुप्रास

(c) चमक (d) रूपक

103. कन अलंकार लागेक ?

तरे आँगिनाय हामे नाचब मलहरिया
तरे आँगिनाय हामे नाचब मलहरिया।।

(a) श्लेष (b) उपमा

(c) वृत्तानुप्रास (d) उतप्रेक्षा

104. कन अंलकार लागेक ?

टुसु टुसु करि हामरा टुसु नाइखअ घारे
कने टुसुके लेई गेला फुलेक माला देइ गो ।

(a) वीप्सा (b) उपमा
(c) वृत्तानुप्रास (d) रूपक

105. कन अलंकार लागेक ?

दिहा दिहा करम राजा दिहा आशीष

(a) उपमा (b) यमक
(c) रूपक (d) वीपसा

106. कन अलंकार हेकेइक ?

घन गरजतअ धन
सन सन पवन छने छेन विजुरिआ खेले।

(a) रूपक (b) यमक
(c) श्लेष (d) उपसा

107. कन अलंकार लागेक ?

अधरे दुकुल जिनि वाँधली फुल

(a) छेकानुप्रास (b) यमक
(c) उपमा (d) रूपक

108. कन अंलकार लागेक ?

आज हामके वेचि देले माँइ धरि जेसन दहेक मछलि गो

(a) श्लेष (b) उपमा
(c) छेकानुप्रास (d) रूपक

109. कन अलंकार लागेक ?

रामचन्द्र पुत्र लागि जितिया परब

(a) उतप्रेक्षा (b) रूपक
(c) उपमा (d) श्लेष

110. कन अलंकार लागेक ?

गगनेते चाँद उठेछे चाँद बठेनअ मानुष बठे

(a) उपमा (b) यमक

(c) वीप्सा (d) उपप्रेक्षा

111. कन अंलकार लागेक ?

के से रमनी गौर वरनी भानुसुता कुल जाछेरे

हेर हे सुबल श्रीमुख कमल मधु लोभे अलि धाइ रे

(a) वीप्सा (b) भ्रान्तिमान

(c) रूपक (d) उपमा

112. कन अलंकार लागेक ?

कि दिब उपमा रम्मा, तिलातमा रति नहे समतुल

(a) छेकानुप्रास (b) उपमान

(c) यमक (d) बेतिरेक

113. कन अलंकार लागेक ?

अबिधि तुमारे बलि कि गुने विधि बलाली

करअ अबिधि सकलि ?

(a) व्याज स्तुति (b) रूपक

(c) उपमान (d) यमक

114. कन अंलकार लागेक ?

दुति निति निति राति पतिर ज्वालाय

मन छन छन जेन मीन मीन खाय ?

(a) यमक (b) अनुप्रास

(c) उपमा (d) श्लेष

उत्तरमाला

1. (a)	16. (a)	31. (d)	46. (d)	61. (b)	76. (c)	91. (c)	106. (b)
2. (a)	17. (a)	32. (A)	47. (c)	62. (b)	77. (b)	92. (d)	107. (c)
3. (a)	18. (b)	33. (a)	48. (b)	63. (c)	78. (d)	93. (b)	108. (b)
4. (b)	19. (a)	34. (a)	49. (a)	64. (b)	79. (d)	94. (a)	109. (b)
5. (a)	20. (d)	35. (d)	50. (c)	65. (a)	80. (c)	95. (b)	110. (d)
6. (b)	21. (a)	36. (a)	51. (a)	66. (a)	81. (a)	96. (b)	111. (b)
7. (a)	22. (a)	37. (d)	52. (b)	67. (a)	82. (d)	97. (c)	112. (
8. (a)	23. (a)	38. (d)	53. (d)	68. (d)	83. (b)	98. (c)	113. (a
9. (a)	24. (b)	39. (c)	54. (d)	69. (a)	84. (d)	99. (b)	114. (b)
10. (a)	25. (a)	40. (a)	55. (b)	70. (d)	85. (d)	100. (c)	
11. (a)	26. (b)	41. (a)	56. (c)	71. (d)	86. (b)	101. (d)	
12. (a)	27. (a)	42. (a)	57. (b)	72. (b)	87. (c)	102. (b)	
13. (b)	28. (b)	43. (A)	58. (b)	73. (d)	88. (d)	103. (c)	
14. (a)	29. (a)	44. (a)	59. (b)	74. (b)	89. (b)	104. (c)	
15. (a)	30. (d)	45. (b)	60. (b)	75. (b)	90. (c)	105. (d)	

प्राप्ति स्थान :

पतित पावन महतो

बड़ाजमुआ, बरवाअड्डा, पो०-कल्याणपुर
धनबाद (झारखण्ड)
पिन कोड - 826004

मुद्रक : गिरीधारी कम्प्यूटर प्रिन्टर्स	मुल्य : 60/-